तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 11, अंक - 11-12, अक्टूबर-नवंबर 2023 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

पीएम श्री विद्यालय : बदलेंगे शिक्षा की तस्वीर

अंधकार को मिटा

ज्ञानदीप माँ जला
बुद्धि का कमल खिला
प्रार्थना है यही।

अंधकार को मिटा
मोह आवरण हटा
कंठ में सुराग भर
गीत हो उठें मुखर
गीत औ संगीत का
बना रहे सिलसिला।
कामना करूँ यही।।

बुद्धि माँ करो विमल
भाव दे नवल-नवल
तम सघन विनाश कर
मूढ़ता का नाश कर
बुद्धि हो समुज्ज्वला।
चाहना है बस यही।।

माँ मुझे दुलार दे
सप्त स्वर सँवार दे
नित नवीन भाव भर
शब्द-शब्द हों प्रखर
कर सकूँ जगत भला।
भावना है शुभ यही।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'
व्याख्याता-हिन्दी
अशोक उच्च माध्यमिक विद्यालय
लहार, भिण्ड, मप्र

शिक्षा सारथी

अक्टूबर-नवंबर 2023

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
स्कूल शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
सुधीर राजपाल
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
आशिमा बराड़
महानिदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ. आर.एस. ढिल्लों
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सतपाल शर्मा
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Sunita Devi on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"लोहे का स्वाद लोहार से मत पूछो, उस घोड़े से पूछो जिसके मुँह में लगाम है।"
-धूमिल

» हरियाणा को मिली पीएम श्री विद्यालयों की सौगात 5
» 21वीं सदी के कौशलों के पीएम श्री स्कूल 14
» शिक्षा का नया सफर 21वीं सदी के एआई कौशल के साथ 16
» नाटक : शिक्षण का बेहतरीन उपकरण 19
» सुनहरे भविष्य की ओर ले जाती कला-कार्यशालाएँ 20
» युवा संसद : भविष्य नए भारत का 24
» चित्ताकर्षक पोर्ट्रेट बनाता है पंचकूला का छात्र खुशहाल 25
» खेल-खेल में विज्ञान 28
» 50 साल में जल OH से H_2O बना 30
» बाधाएँ हमें मजबूत बनाती हैं 31
» The Most Important Answers of our Life 32
» Life is like a flute, the one who has learned to play .. 33
» Hard Work: A Golden Key to Success 34
» Teacher as an Ambassador of Peace in a Multicultural .. 35
» Drizzle of Tears 41
» Be Creator of 'miracles' with your brain 42
» Significance of Dusshera festival 44
» The Sounds of Silence 45
» The significance of Diwali 46
» Amazing Facts 48
» General Knowledge 49

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

PM SHRI

Pradhan Mantri ScHools for Rising India

Creating holistic and well-rounded individuals equipped with key 21st Century skills

पीएम श्री विद्यालय बनेंगे शिक्षण के उत्कृष्ट केंद्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने को लेकर केंद्र तथा राज्य सरकार पूरी तरह प्रतिबद्ध है और इस प्रतिबद्धता का स्पष्ट उदाहरण है- पीएम श्री योजना। इसके अंतर्गत विभिन्न शैक्षणिक क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए बच्चों में 21वीं सदी के कौशलों को बढ़ावा देने हेतु एक समान, समावेशी और आनंदमय स्कूल वातावरण के साथ उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों को बढ़ावा देने और मौजूदा स्कूलों को सभी मूलभूत सुविधाओं से सशक्त करने के उद्देश्य से हरियाणा में इस योजना के तहत 252 राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों को पीएम-श्री स्कूल बनाना निश्चित किया गया है। पीएम श्री स्कूलों में डिजिटल शिक्षा का समावेश करने के लिए आईसीटी लैब, स्मार्ट क्लास रूम और डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना की जाएगी, जिससे विद्यार्थियों को 21वीं सदी की तकनीक से रूबरू कराया जाना आसान होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रोत्साहित किया जाएगा। अन्य आधुनिक सुविधाओं के साथ इन स्कूलों में विज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय और वोकेशनल लैब आदि भी उपलब्ध कराई जाएँगी। साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, आर्ट तथा मैथेमेटिक्स विषयों पर खास ध्यान दिया जायेगा। साथ ही साथ यहाँ वोकेशनल कौशलों का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। यही नहीं, यहाँ खेल, कला, संगीत, नृत्य, ड्रामा आदि गतिविधियों के साथ-साथ पर्यावरण की शिक्षा भी प्रदान की जाएगी। ये सभी स्कूल अन्य सभी स्कूलों के लिए उदाहरण बनेंगे।

बीते दिनों माननीय केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने रोहतक में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदेश को पीएम श्री विद्यालयों की सौगात दी। हम सभी आशा करते हैं कि केंद्र सरकार के सहयोग के साथ प्रदेश सरकार के इन प्रयासों से हरियाणा का हर विद्यार्थी इक्कीसवीं सदी के तकनीकी कौशलों से सुसज्जित और समृद्ध होकर राज्य और देश के विकास में अपना योगदान दे पायेगा।

आप की चहेती पत्रिका 'शिक्षासारथी' का मौजूदा अंक पीएम श्री योजना पर केंद्रित है। हमेशा की तरह आपके सुझावों व प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

-संपादक

हरियाणा को मिली पीएम श्री विद्यालयों की सौगात

रोहतक में आयोजित भव्य समारोह में केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान रहे मुख्यातिथि, अध्यक्षता मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने की, प्रदेश में बनेंगे 252 पीएमश्री स्कूल

डॉ. प्रदीप राठौर

केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान बीते दिनों रोहतक स्थित महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के टैगोर सभागार में हरियाणा स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित पीएम श्री स्कूलों के लोकार्पण समारोह में मुख्यातिथि के रूप में पधारे। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेश को पीएम श्री विद्यालयों की सौगात दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में शिक्षा के स्तर में और सुधार के लिए प्रथम चरण में 124 पीएम श्री स्कूलों का नए सत्र से शुभारंभ होगा तथा दूसरे चरण में 128 स्कूलों के शुभारंभ के साथ ही इन स्कूलों की संख्या 252 हो जायेगी।

मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने विश्वास जताया कि ये विद्यालय शिक्षा के स्तर को उन्नत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

गौरतलब है कि इस कार्यक्रम के लिए विभाग द्वारा सभी पीएम श्री विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, संबंधित क्षेत्र के सरपंच या पार्षदगण और उनकी विद्यालय प्रबंधन समितियों के सदस्यों के साथ सभी ज़िलों के ज़िला शिक्षा अधिकारियों, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारियों, जिला परियोजना समन्वयकों आदि को आमंत्रित किया गया था।

शिक्षा वही जो सर्वांगीण विकास करे : मनोहर लाल

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि ये शिक्षा ही है जो देश का भाग्य बदलने की ताकत रखती है। देश जिस लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहा है, उसे हासिल करने में शिक्षा की अहम भूमिका है। उन्होंने कहा कि युवाओं को उनकी प्रतिभा के आधार पर आँका जाए। उन्होंने कहा कि बच्चों को अच्छे संस्कार, व्यवहार के साथ-साथ अपने

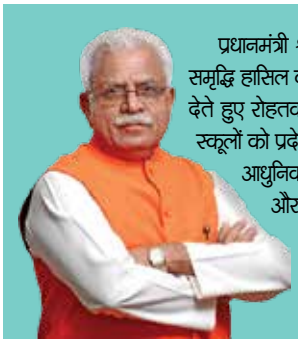

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की दूरदर्शी नीतियों से देश शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व समृद्धि हासिल कर रहा है। प्रदेश में शिक्षण संस्थानों के विकास और उन्नयन को और गति देते हुए रोहतक में केंद्रीय शिक्षामंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान जी ने हरियाणा के 124 पीएम श्री स्कूलों को प्रदेशवासियों को समर्पित किया। नवीनतम तकनीक, स्मार्ट क्लास, खेल और आधुनिक सुविधाओं से युक्त इन स्कूलों से निश्चित ही प्रदेश के बच्चे लाभान्वित होंगे और उनका भविष्य उज्ज्वल बनेगा।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

इतिहास व संस्कृति की जानकारी होना तथा इनसे लगाव होना भी अनिवार्य है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई शिक्षा नीति के माध्यम से रोज़गारपरक शिक्षा के नए प्रावधान किए हैं। उन्होंने पीएम श्री स्कूलों के संदर्भ में कहा कि इस योजना के तहत विद्यालयों को सम्मान देने के साथ-साथ विद्यालयों से जुड़े व्यक्तियों को भी मान-सम्मान दिया गया है। उन्होंने अध्यापकों का आह्वान किया कि वे विद्यार्थियों के स्तर को सुधारने के लिए ज्ञानवर्धक और संस्कार आधारित शिक्षा प्रदान करवाएँ। उन्होंने कहा कि आज के विद्यार्थी कल के अच्छे नागरिक बने, इसके लिए उसे अच्छे संस्कार देने के साथ-साथ पढ़ाई के लिए अनुकूल माहौल दिया जाए। अब शिक्षक को तय करना होगा कि बच्चे को किस तकनीक के जरिए शिक्षित करके आगे बढ़ाया जाए।

हरियाणा शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय मॉडल बने : धर्मेंद्र प्रधान

इस अवसर पर केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री, भारत सरकार श्री धर्मेंद्र प्रधान ने प्रथम चरण में प्रदेश के 124 पीएम श्री विद्यालयों का लोकार्पण करते हुए प्रदेश को अनूठी सौगात दी। इस दौरान उन्होंने महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के टैगोर सभागार से शिक्षा विभाग की स्कूल एप और निपुण कार्यक्रम की मोबाइल एप्लीकेशन भी लांच की जिसका विद्यार्थियों को खासा लाभ मिलेगा। इस अवसर पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21 वीं सदी के भारत को नई दिशा देने वाली है और हम उन पलों का हिस्सा बनने जा रहे हैं जो हमारे देश की युवा पीढ़ी के भविष्य निर्माण की नींव रख रहे हैं।

दशहरे के शुभ अवसर पर आयोजित लोकार्पण कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि बीती 29 जुलाई को माननीय प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति की तीसरी वर्षगाँठ पर अखिल भारतीय शिक्षा समागम में देश के 6207 स्कूलों के लिए आर्थिक अनुदान की पहली किश्त के रूप में 630 करोड़ रुपये की राशि जारी की थी, उस समय हरियाणा के भी 250 स्कूलों का चयन किया गया था। उन्होंने इस बात के लिए हर्ष जाहिर किया कि इस अवसर पर प्रदेश के शिक्षा विभाग ने कुछ और सुधारात्मक कार्यक्रमों का शुभारंभ किया है। गौरतलब है कि इस अवसर पर उनके करकमलों से निपुण हरियाणा एप के साथ-साथ आईसीटी लैब व वर्चुअल पीएमश्री लैब का भी लोकार्पण किया गया। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात की जानकारी है कि हरियाणा में शिक्षक की नियुक्ति और तबादला एक उद्योग हुआ करता था। लेकिन मौजूदा सरकार के समय में बड़े ही पारदर्शी ढंग से नियुक्ति व स्थानान्तरण हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि हरियाणा के शिक्षा मंत्री ने उन्हें यह जानकारी दी है कि प्रदेश में जितने शिक्षकों की ऑनलाइन ट्रांसफर हुई है, उनमें से 90 प्रतिशत इससे संतुष्ट हैं। श्री प्रधान के कहा कि तकनीक के इस्तेमाल से हरियाणा ने स्थानान्तरण का यह तरीका अपना कर पूरे देश के सामने एक मिसाल प्रस्तुत की है। उन्होंने इसके लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री व शिक्षामंत्री को बधाई दी। उन्होंने कहा कि हरियाणा में टेक्नॉलॉजी के माध्यम से शिक्षा देने के लिए जो टैबलेट दिए गए हैं, वे भी एक अच्छा प्रयास हैं। उन्होंने पीएम श्री स्कूल योजना के बारे में बताया कि यह केंद्र सरकार की महत्त्वाकांक्षी योजना है जिसके तहत 21वीं

सदी की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विद्यालयों को अपग्रेड किया जाना है। उन्होंने कहा कि देश में लंबे समय के बाद नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई है, जिससे देश को बहुत उम्मीदें हैं। उन्होंने कहा कि इस शिक्षा नीति में कुछ ऐसी बातें हैं जिन पर विशेष बल दिया गया है।

उन्होंने स्मरण दिलाया कि देश में एक समय सर्व शिक्षा अभियान चलाया गया था, जिसका आदर्श वाक्य था - सब पढ़ें, सब बढ़ें। इसके लोगो पर एक पेंसिल पर सवारी करते हुए दो बच्चों को दिखाया गया था। उन दिनों एक गीत भी हम सुनते थे- 'स्कूल चलें हम'। वहाँ से आगे बढ़कर हम समग्र शिक्षा तक पहुँचे, और अब पीएम श्री विद्यालयों तक पहुँच रहे हैं।

उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति छात्रों की विशिष्ट क्षमताओं की पहचान और विकास, शिक्षा के ढाँचे को लचीला, सीखने पर जोर, छात्रों में तार्किक और रचनात्मक सोच का विकास, रोज़गारोन्मुखी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए है। नई शिक्षा नीति में शिक्षा के ढाँचे में बड़ा बदलाव होगा। नई शिक्षा नीति में 10+2 के स्थान पर 5+3+3+4 का प्रावधान किया गया है।

नए प्रावधानों के अनुसार 3 से 8 साल तक के बच्चों के लिए फाउंडेशन स्टेज है। बालवाटिका- 1,2,3 के बाद पहली और दूसरी कक्षा होगी। इसके बाद तीन साल तीसरी से पाँचवीं तक, तीन साल छठी से आठवीं तक और 4 साल नवीं से बारहवीं तक का प्रावधान है। पिछली नीति में 6 वर्ष के बच्चों को कक्षा-1 में प्रवेश दिया जाता था, इसमें 3 से 6 वर्ष के बच्चों को शामिल नहीं किया गया था। 3 वर्ष के बच्चे या तो आँगनवाड़ी में आते थे, या फिर शहरों के स्कूलों में प्लेवे या केजी में पढ़ते थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 3 से 6 वर्ष के बच्चों को शामिल करने की एक महत्वाकांक्षी व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि बच्चों का लगभग 85 प्रतिशत मानसिक विकास 6 वर्ष की आयु तक हो जाता है, इसलिए यह आवश्यक है कि बच्चों को इसी आयु में अच्छा पोषण और अच्छी शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए। जिससे बच्चों के भविष्य का एक अच्छा आधार बन सके। अर्ली चाइल्ड केयर एंड एजुकेशन (ईसीसीई) मुख्य रूप से लचीली, बहुआयामी और खेल

पीएम श्री (प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया) योजना के तहत पूरे भारत में 14,500 स्कूलों का विकास और उन्नयन होगा । ये मॉडल स्कूल बनेंगे जो एनईपी की पूरी भावना को समाहित करेंगे। पीएम श्री स्कूलों में शिक्षा प्रदान करने का एक आधुनिक, परिवर्तनकारी और समग्र तरीका होगा। शिक्षण के खोजोन्मुख, सीखने पर केंद्रित तरीके पर जोर दिया जाएगा। नवीनतम प्रौद्योगिकी, स्मार्ट क्लासरूम, खेल और अन्य गतिविधियों के अलावा आधुनिक बुनियादी ढाँचे पर भी ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 5 सितंबर, 2023 को किया गया ट्वीट

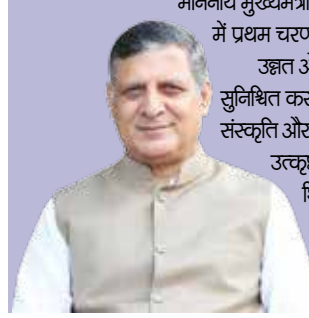

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में माननीय श्री धर्मेंद्र प्रधान जी, शिक्षा मंत्री भारत सरकार ने, माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी, माननीय सांसद डॉ.अरविंद शर्मा जी के साथ हरियाणा में प्रथम चरण के 124 पीएम-श्री स्कूल हरियाणा की जनता को समर्पित किये ।

उन्नत और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से हरियाणा के बच्चों का उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करने की दिशा में यह एक ऐतिहासिक दिन है। स्किल-आधारित, जन-जीवन-संस्कृति और मातृभाषा आधारित 21वीं सदी की आधुनिक शिक्षा के साथ पीएम-श्री स्कूल उत्कृष्टता का प्रतीक होंगे। पीएम श्री स्कूल के शुभारंभ से हरियाणा में विद्यालयी शिक्षा की क्षमता बढ़ेगी और हरियाणा के बच्चे खूब लाभान्वित होंगे।

कँवर पाल
स्कूल शिक्षा मंत्री, हरियाणा

आधारित बहुस्तरीय व्यवस्था है जिसके अनुसार बच्चों में अक्षर ज्ञान, गिनती, चित्रकला, रंग, आकार का प्रारंभिक ज्ञान देने के साथ-साथ बच्चों में नैतिकता, शिष्टाचार और टीम-भावना जैसे गुणों का विकास करना भी है।

उन्होंने कहा कि कार्यक्रम के दौरान उन्होंने नन्हे-मुन्ने बच्चों को मंच पर रामलीला करते देखा। वे सचमुच उनके अभिनय से अभिभूत हो गए। उन्होंने कहा कि बच्चों की अभिनय क्षमता के सामने तो गजेंद्र जी भी पीछे रह जाएँगे। उनका इशारा श्री गजेंद्र चौहान की ओर था, जो उस समय पंडित लख्मीचंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ परफर्मिंग एंड विज़ुअल आर्ट्स रोहतक के कुलपति के नाते उस कार्यक्रम में मौजूद थे। गौरतलब है कि 'महाभारत' धारावाहिक में इस कलाकार ने युधिष्ठिर की सशक्त भूमिका निभाई थी। यह सुनते ही श्री गजेंद्र मुस्कराते हुए अन्य लोगों के साथ तालियाँ बजाने लगे।

श्री प्रधान ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दूसरी प्रमुख बात है-मातृभाषा और स्थानीय भाषा। उन्होंने कहा कि हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि अंग्रेज़ी माध्यम में शिक्षा ग्रहण करके ही हमारे बच्चे अधिक अच्छे बनेंगे। उन्होंने कहा कि इतिहास इस बात का गवाह है कि अपनी भाषा में शिक्षा लेने वाले भी जीवन में उन्नति के ऊँचे शिखरों तक पहुँचे हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की आरंभिक

शिक्षा अंग्रेज़ी माध्यम से नहीं हुई थी। सब जानते हैं कि वे विश्व के महान वैज्ञानिक बने। हमारी वर्तमान राष्ट्रपति महोदया ने भी अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा ग्रहण नहीं की। सुदूर वनांचल के आदिवासी समाज की महिला अपनी मातृभाषा में अपनी पढ़ाई और समझ बढ़ाते हुए देश के सर्वोच्च पद यानी राष्ट्रपति पद तक पहुँची हैं। इसलिए इस बात का भ्रम किसी के मन में नहीं होना चाहिए कि अंग्रेज़ी भाषा का ज्ञान न होने पर हम जीवन में पिछड़ जाएँगे। उन्होंने कहा भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी अंग्रेज़ी माध्यम से नहीं पढ़े हैं। वे स्वयं कहते हैं कि युवाओं को उनकी प्रतिभा की जगह उनकी भाषा के आधार पर जज किया जाना सबसे बड़ा अन्याय है। श्री प्रधान ने कहा कि विश्व के बड़े-बड़े अर्थनीति के ज्ञाताओं ने अपनी मौलिक समझ, जिसे मौलिक चिंतन या क्रिटिकल थिंकिंग कहा जाता है, को बढ़ाने के लिए अपनी मातृभाषा को ही अपनाया है।

उन्होंने कहा कि अपनी भाषा में शिक्षण पर बल देकर विश्व के अनेक देशों ने खूब उन्नति की है। एक समय था जब किसी उत्पाद पर 'मेड इन जापान' की मोहर लगी होती थी तो यह माना जाता था कि यह उत्पाद बेहतरीन क्वालिटी का होगा। हालांकि अब तो 'मेड इन इंडिया' भी बहुत आगे है। जापानी लोग इस प्रकार से अंग्रेज़ी के पीछे नहीं भागते। भारत में लंबे समय तक गुलामी के कारण एक खास तरह की मानसिकता बन गई है कि अंग्रेज़ी भाषा ही जीवन में विकास का आधार है, जबकि इस बात में बिल्कुल भी सच्चाई नहीं है। उन्होंने कहा कि जिसे विश्व बाज़ार में जाना है, हरियाणा की गेहूँ को, हरियाणा की सब्जी को विश्व में पहुँचाना है, उसे हम अंग्रेज़ी पढ़ाकर भेजेंगे। लेकिन अच्छी गेहूँ उगाने के लिए अच्छी सब्जी, अच्छी शक्कर, अच्छा मक्खन बनाने के लिए अंग्रेज़ी सीखना कोई जरूरी नहीं है। तब तो ठेठ हरियाणवी से ही काम चल जाएगा। आज एशियन खेलों में सबसे ज्यादा देश में मैडल जिस प्रदेश के खिलाड़ियों ने जीते हैं, वह हरियाणा है। किसी खेल में प्रवीणता पाने

विद्यालय मानकीकरण एप का लोकार्पण

कार्यक्रम में विद्यालय मानकीकरण एप को लांच किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख निर्देशों में से एक निर्देश यह है कि विद्यालयों के लिए स्कूल क्वालिटी एसेसमैंट एंड एक्रीडीटेशन फ्रेमवर्क तैयार किया जाए, जिस पर हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग गंभीरता से काम कर रहा है। इसके लिए SQAAF का गठन किया गया है। इसी संबंध में शिक्षा विभाग न्यूनतम बेंच मार्किंग पर स्कूलों की मानक स्थापना के लिए 'स्कूल एक्रीडीटेशन हरियाणा' यानी SACH का भी गठन किया है। इसके लिए अनेक देशों के भी कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए एक विशिष्ट फ्रेमवर्क तैयार किया गया है। यह कार्यक्रम सात पहलुओं पर काम करेगा, जो हैं- स्कूल लीडरशिप एंड मैनेजमैंट, टीचिंग एंड लर्निंग, एकेडमिक प्रोग्रेस, होलिस्टिक डिवेलपमैंट, हैल्थ एंड सेफ्टी, स्कूल इंफ्रास्ट्रचर और कम्युनिटी एंगेजमैंट। यह कार्यक्रम विद्यालयों की सुधार प्रक्रिया को सुदृढ़ करेगा।

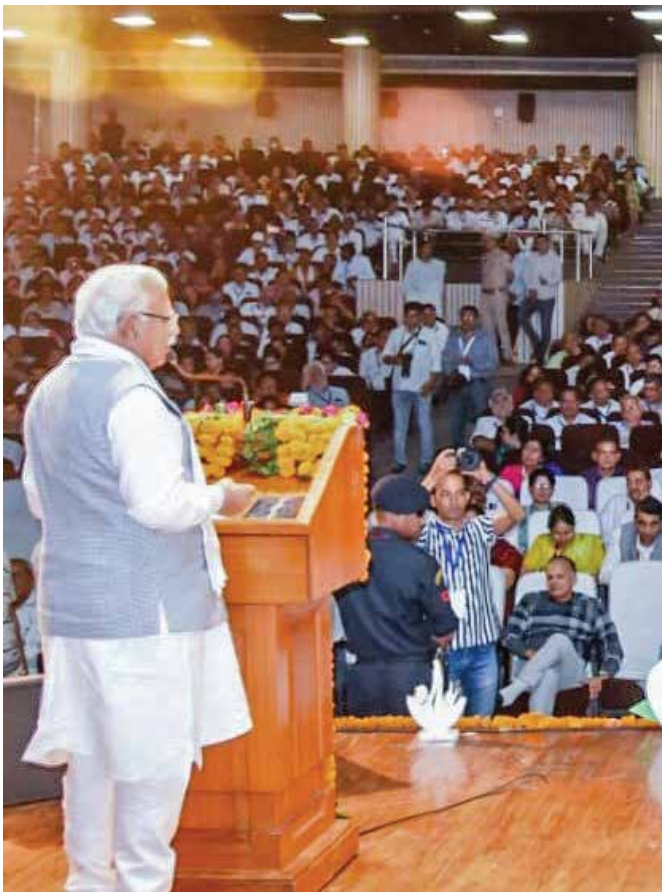

के लिए अच्छी अंग्रेज़ी जानना बिल्कुल जरूरी नहीं है।

उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में तीसरी सबसे बड़ी बात है स्किल एंड टेक्नीकल बेस्ड एजुकेशन। आने वाले दिनों में स्किल बेस्ड शिक्षा पढ़ाई का आवश्यक हिस्सा बन जाएगी। इसकी पाठ्य पुस्तकों पर कार्य चल रहा है।

उन्होंने कहा कि हरियाणा में 'निपुण हरियाणा' अभियान बहुत अच्छे ढंग से चल रहा है। स्किल आधारित शिक्षा देने में भी हरियाणा एक अग्रणी राज्य है। इसके लिए उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री व शिक्षामंत्री को बधाई दी। उन्होंने कहा कि व्यवस्था को सुधारने और शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों को तेज गति से आगे बढ़ाने के लिए केंद्र और प्रदेश सरकार मिलकर कार्य कर रही हैं। निश्चित तौर पर इससे शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार होगा।

उन्होंने कहा कि हर पीएम श्री विद्यालय को दो करोड़ रुपये की राशि पाँच साल में दी जाएगी। इसे स्कूल में अपनी आवश्यकता के अनुसार खर्च कर पाएँगे। जाहिर सी बात है कि ये आवश्यकताएँ अलग-अलग स्कूलों की अलग-अलग हो सकती हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि हरियाणा में चलने वाले पीएम श्री विद्यालय अन्य विद्यालयों के लिए उदाहरण बनेंगे। हरियाणा अन्य क्षेत्रों की भाँति इनके संचालन में भी अग्रणी रहेगा और शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय मॉडल बनेगा। उन्होंने सभी प्रधानाचार्यों, विद्यालय प्रबंधन समितियों के सदस्यों व सरपंचों से आग्रह किया कि शिक्षा उन्नयन के यज्ञ में सभी अपनी-अपनी आहुति डालें।

निपुण हरियाणा एप का लोकार्पण

कार्यक्रम में 'निपुण हरियाणा एप' का लोकार्पण किया गया। यह सर्वविदित है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सबसे अधिक बल बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को दिया गया है। निपुण के दिशा-निर्देशों में यह भी स्पष्टता से बताया गया है कि इस लक्ष्य को पाने के लिए तकनीक की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेगी। इसी बात को ध्यान में रखते हुए प्रदेश में 'निपुण हरियाणा एप' बनाया गया, जिसके अन्तर्गत निपुण हरियाणा मेंटर एप, निपुण हरियाणा टीचर एप और निपुण हरियाणा पेरेंट एप आएँगी। एआई की सहायता से बच्चों के सीखने के स्तर और उसको प्रभावित करने वाले विभिन्न मानकों को इन एप्स के माध्यम से सभी स्टेकहॉल्डरस तक रियल टाइम सूचना पहुँचाई जा रही है ताकि चल रहे कार्यों की प्रगति, समीक्षा, जाँच और सुधार किया जा सके। इन एप्स के माध्यम से जहाँ शिक्षकों को विद्यार्थियों की अलग-अलग दक्षताओं के परिणाम समय-समय पर मिलते रहेंगे, वहीं अभिभावक भी शीघ्रता से इनसे अवगत होते रहेंगे।

आईसीटी लैब्स का लोकार्पण

कार्यक्रम मेंआईसीटी लैब का लोकार्पण किया गया। स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में आज आईसीटी का योगदान बढ़ता जा रहा है, आईसीटी के माध्यम से अनेक कार्य संभव होने लगे हैं। सामान्य पाठ्यक्रम में भी आईसीटी का समावेश हो रहा है। पठन-पाठन को रुचिकर बनाने में, स्थायी व सरल बनाने में तथा मूल्यांकन को बेहतर तरीके से प्रदर्शित करने में आईसीटी बहुत योगदान दे रहा है। इससे अध्यापकों का कार्य भी आसान हो रहा है, साथ ही विद्यार्थियों एवं माता-पिता को इससे जहाँ बेहतर परिणाम प्राप्त हो रहे हैं, वहीं प्रत्येक विद्यार्थी को आईसीटी आधारित सॉफ्टवेयर के माध्यमों से अपनी प्रगति का समुचित मूल्यांकन सही समय पर मिल रहा है। आईसीटी प्रयोगशालाओं की स्थापना को पीएम श्री विद्यालय योजना में भी महत्त्वपूर्ण माना गया है। राज्य के पीएम श्री विद्यालयों में आईसीटी लैब की स्थापना तथा उनके संचालन के लिए योग्य शिक्षकों, साथ ही उनके उपयोग के लिए समुचित सॉफ्टवेयर की उपलब्धता आवश्यक की गई है। ये विद्यालय उत्कृष्टता के केंद्र होंगे तथा माननीय प्रधानमंत्री जी के डिजिटल भारत के सपने को साकार करने की नींव बनेंगे। इसलिए यह आवश्यक है कि इन विद्यालयों में समुचित रूप से आईसीटी लैब्स की स्थापना की जाए। लक्ष्य है कि हम अपने प्रत्येक विद्यालय में उत्कृष्ट श्रेणी की लैब स्थापित करें, सभी प्रकार की लैब उसके अंदर हों। विशेष कर जहाँ तक आईसीटी लैब की बात है, तो उनका स्तर भी अंतरराष्ट्रीय स्तर का हो, जिससे हमारे हरियाणा के पीएम श्री विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी अंतरराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा ग्रहण कर सकें और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, खास तौर पर आईटी के क्षेत्र में जो रोज़गार के अवसर उपलब्ध हैं, उन्हें प्राप्त कर उनका लाभ उठा सकें।

शिक्षा की अनेक योजनाओं में हरियाणा अग्रणीः कँवरपाल

इससे पूर्व प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री कँवरपाल ने बताया कि प्रदेश में शुरू किए गए 4000 प्ले वे स्कूलों को अब बाल वाटिका स्कूल के नाम से जाना जाएगा। सरकार द्वारा इतने ही और स्कूल भी भविष्य में शुरू किए जाएँगे। बच्चों को खेल-खेल में शिक्षा देने के लिए आँगनवाड़ी केन्द्रों को भी इन स्कूलों में परिवर्तित किया गया है। शिक्षा विभाग द्वारा 5 लाख बच्चों तथा उनके अध्यापकों को निःशुल्क टैबलेट, निशुल्क इंटरनेट तथा लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम देकर विश्व की सबसे बड़ी ई-अधिगम योजना चलाई गई है। वोकेशनल शिक्षा में हरियाणा पूरे भारत में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहा है। चाहे नई ट्रेड शुरू करनी हो या नवाचार आरंभ करना हो, हरियाणा हमेशा अग्रणी रहता है। निपुण कार्यक्रम में अध्यापक ऐसी सामग्री विकसित कर रहे हैं जो पढ़ाई को रुचिकर बना रही है। अध्यापक स्थानांतरण पॉलिसी पूरे भारत में अग्रणी पहचान बना चुकी है। एसएमसी के माध्यम से स्कूलों में भवन निर्माण, ड्यूल डेस्क की खरीद का सफल प्रयोग पूरे भारत के लिए मॉडल है। सुपर हंड्रेड जैसे कार्यक्रम से लाभ से वंचित वर्ग के बच्चों के लिए आईआईटी तथा एमबीबीएस में जाने के नए रास्ते खुले हैं। विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क यातायात की परिवहन सुरक्षा योजना की बात की जाए या विभिन्न स्कॉलरशिप आदि की, हरियाणा अनेक मामले में पूरे भारत में अग्रणी है। राज्य के स्कूलों में ढाँचागत सुविधाओं के विकास के लिए तेज़ गति से कार्य हो रहे हैं। बाल वाटिका-3 आरंभ करके हरियाणा ने

वर्चुअल लैब का लोकार्पण

कार्यक्रम में वर्चुअल लैब का भी लोकार्पण किया गया। वर्चुअल लैब का उद्देश्य छात्रों को वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी प्रयोगों का सुरक्षित और वास्तविक अभ्यास कराना है। बिना किसी वास्तविक प्रयोगशाला की जरूरत के यह विशेष रूप से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न विषयों के प्रैक्टिकल प्रयोगों के लिए उपयोगी है और छात्रों को सुरक्षित और विशेषज्ञता से अभ्यास करने का अवसर प्रदान करती है। जिस प्रकार के 21वीं सदी के कौशलों को प्रदान करने के लिए पीएमश्री विद्यालयों की कल्पना की गई है, उनमें वर्चुअल रियलिटी लैब महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इसी की अनुपालना में राज्य के पीएमश्री विद्यालयों में इसकी स्थापना की जा रही है। इन प्रयोगशालाओं में जहाँ एनसीईआरटी से समन्वय करके डिवाइस, उनके सॉफ्टवेयर, उनके वीडियो तथा मॉडल प्रदान किए गए हैं। ऐसी आशा की जा रही है कि ये लैब बहुत जल्दी अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सफल होंगी। गुरुग्राम के पीएम श्री विद्यालय चक्करपुर में एचपी कंपनी द्वारा सीएसआर के तहत वर्चुअल लैब की स्थापना पहले ही की जा चुकी है।

औपचारिक पूर्व प्राथमिक शिक्षा को लागू किया है। बेटियों की शिक्षा में, बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ में प्रयास हुए हैं जिसमें उन्हें आत्मरक्षा के गुर सिखाने के लिए विशेष कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

उत्कृष्टता की नई गाथा लिखेंगे पीएमश्री स्कूल : डॉ. अंशज सिंह

कार्यक्रम के आरंभ में माध्यमिक शिक्षा विभाग के तत्कालीन निदेशक डॉ. अंशज सिंह ने मुख्यातिथि सहित सभी गणमान्य अतिथियों का अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि यह गर्व की बात है पीएम श्री विद्यालयों का उपहार प्रदेश को देने के लिए केंद्रीय मंत्री स्वयं पधारे हैं। उन्होंने बताया कि हरियाणा में माननीय मुख्यमंत्री महोदय के कुशल नेतृत्व में, माननीय शिक्षा मंत्री के मार्गदर्शन में अनेक शानदार प्रयास किए गए हैं। इनमें से कुछ की समय-समय पर भारत सरकार के स्तर पर भी सराहना की जाती रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अनुपालना के लिए हरियाणा के त्वरित प्रयास, जिनमें अधिकतर प्रावधानों को 2025 तक लागू करने की वचनबद्धता यह बताती है कि प्रदेश में शिक्षा में कितना सुधार हो रहा है।

स्कूली विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी का मन मोह लिया। मॉडल स्कूल, अंबेडकर चौक, रोहतक की छात्राओं ने 'दुर्गा पूजा' की मनमोहक प्रस्तुति देकर सभी की तालियाँ बटोरीं। राजकीय प्राथमिक पाठशाला इस्माइलाबाद के नन्हे बच्चों ने रामायण के मंचन में अपनी सहज अभिनय क्षमता की जो छाप छोड़ी, उसकी तारीफ स्वयं केंद्रीय शिक्षा मंत्री महोदय ने अपने संबोधन के दौरान की। प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों ने 'रावण के दरबार में अंगद' प्रसंग को बहुत प्रभावी अंदाज़ में प्रस्तुत किया। गौरतलब है कि अक्टूबर माह में प्रदेश के सभी विद्यालयों में 'निपुण' कार्यक्रम के तहत बाल-रामायण की प्रस्तुति कराई गई थी। भाषा के उच्चारण की शुद्धता व मंच की हिचकिचाहट को दूर करने के लिए विभाग का यह प्रयास काफी सफल रहा ।

कार्यक्रम में रोहतक लोकसभा क्षेत्र के सांसद डॉ. अरविंद शर्मा, स्थानीय मेयर श्री मनमोहन गोयल, शिक्षा मंत्रालय से अवर सचिव श्री विपिन कुमार, निदेशक पीएमश्री विद्यालय सुश्री प्रीति मीणा, उप सचिव श्री राहुल पचौरी भी पधारे। विद्यालय शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री सुधीर राजपाल, तत्कालीन निदेशक माध्यमिक शिक्षा डॉ. अंशज सिंह, निदेशक मौलिक शिक्षा डॉ. आरएस ढिल्लों सहित शिक्षा विभाग के अनेक अधिकारी कार्यक्रम में सम्मिलित थे। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष श्री वीपी यादव, सुपवा के कुलपति श्री गजेंद्र चौहान, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजबीर सिंह आदि की उपस्थिति से कार्यक्रम की रौनक बढ़ी।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए रोहतक की ज़िला शिक्षा अधिकारी श्रीमती मनजीत मलिक व उनकी सारी टीम ने खूब मेहनत की। कार्यक्रम का संचालन प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक द्वारा किया गया।

drpradeeprathore@gmail.com

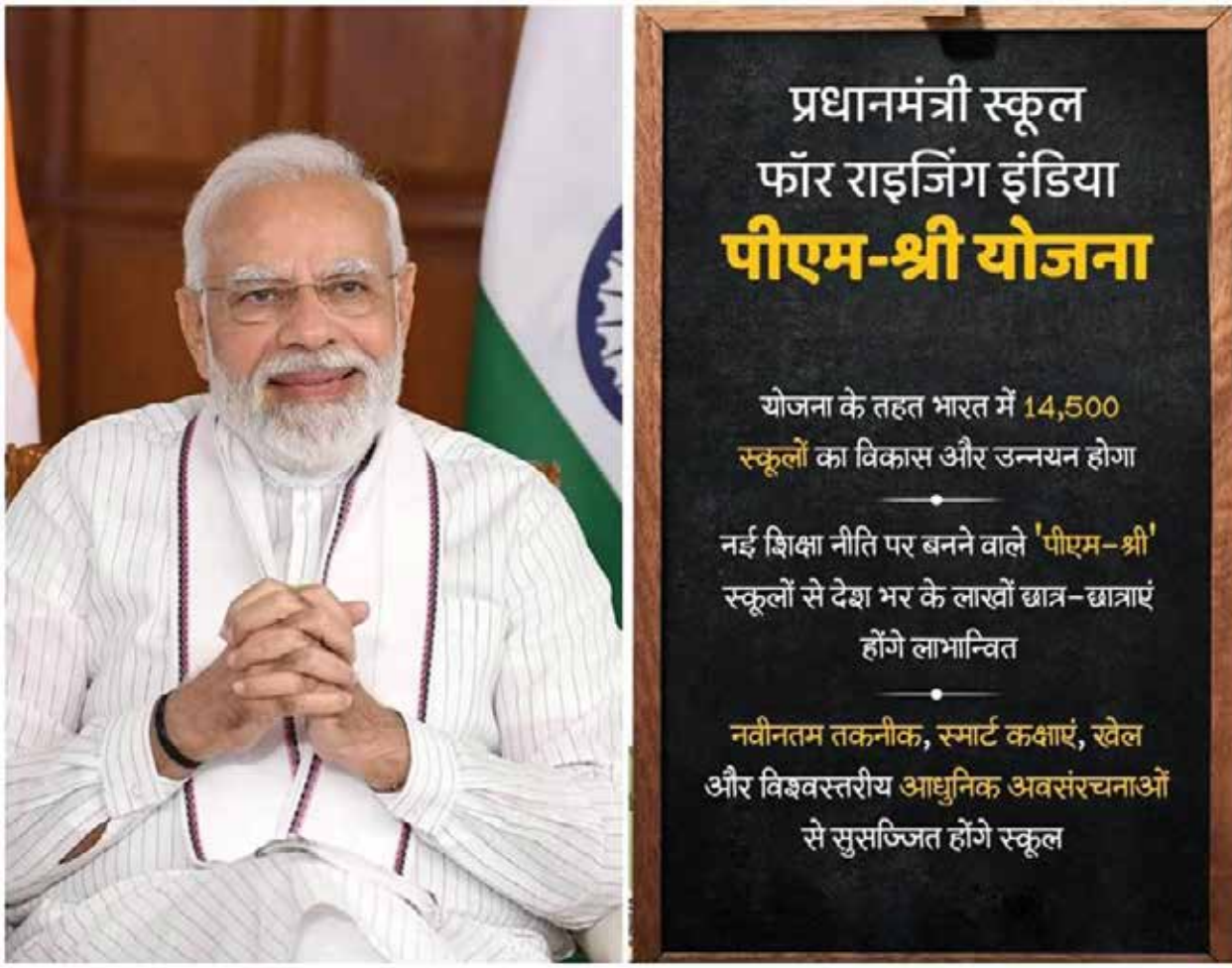

21वीं सदी के कौशलों के पीएम श्री स्कूल

रजनीश सचदेवा

पीएम श्री योजना के तहत शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव लाने की योजना है। इस महत्त्वाकांक्षी योजना के माध्यम से देश भर में 14,500 स्कूलों को अपग्रेड किया जाना है। इस योजना के माध्यम से अपग्रेड किए गए स्कूलों में शिक्षा प्रदान करने का एक आधुनिक, परिवर्तनकारी और समग्र तरीका लाया जाएगा। इसमें नवीनतम तकनीक, स्मार्ट क्लास, खेल और आधुनिक अवसंरचना पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। प्रधानमंत्री जी ने अपने ट्वीट में बताया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने हाल के वर्षों में शिक्षा क्षेत्र को बदल दिया है। उन्होंने कहा कि उन्हें यकीन है कि पीएम श्री स्कूल एनईपी की भावना से पूरे भारत के लाखों छात्रों को लाभान्वित करेंगे। पीएम श्री योजना के माध्यम से पुराने स्कूलों के ढाँचे को सुंदर, मज़बूत और आकर्षक बनाया जाएगा।

भव्य समारोह में की गई थी योजना की घोषणा-

29 जुलाई, 2023 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रगति मैदान के भारत मंडपम् में अखिल भारतीय शिक्षा समागम- 2023 का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में उन्होंने शिक्षा जगत में होने वाले बड़े बदलाव पर चर्चा की। साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के 3 साल पूरे होने पर उन्होंने देशभर के बुद्धिजीवियों का आभार प्रकट किया और पीएम श्री योजना के तहत पहली किश्त राशि भी जारी की। पीएम श्री योजना के तहत राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों, केंद्रीय विद्यालय संगठन, नवोदय विद्यालय समिति के चयनित 6207 स्कूलों को पहले चरण की पहली किश्त के रूप में 630 करोड़ रुपए से अधिक की केंद्रीय राशि हस्तांतरित की गई। केंद्र सरकार की इस योजना के माध्यम से 18 लाख छात्रों को लाभ होगा। वर्ष 2023 से 2026 तक पीएम श्री योजना के तहत 5 वर्षों की अवधि के लिए 27,360 करोड़ रुपए खर्च किए जाएँगे। इस योजना के माध्यम से देशभर के 14,500 स्कूलों को अपग्रेड किया जाएगा। इन स्कूलों में नवीनतम तकनीक, स्मार्ट कक्षा, खेल और आधुनिक इंफ्रास्ट्रचर पर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा।

पीएम श्री योजना के तहत हरियाणा में 252 स्कूल होंगे अपग्रेड-

केंद्र सरकार द्वारा पीएम श्री (प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया) के तहत हरियाणा प्रदेश के 252 स्कूलों को अपग्रेड किया जाएगा। प्रथम चरण में 124 स्कूलों का चयन किया गया है। दूसरे चरण में बचे हुए 128 स्कूलों के चयन की प्रक्रिया जारी है। इन स्कूलों में स्मार्ट क्लास, पुस्तकालय, कौशल प्रयोगशाला, खेल का मैदान, कम्प्यूटर प्रयोगशाला समेत विद्यार्थियों को अन्य सुविधाएँ भी मिलेंगी। इन स्कूलों को नया स्वरूप देकर बच्चों को स्मार्ट शिक्षा से जोड़ा जाएगा। भारत सरकार द्वारा इन विद्यालयों को अगले पाँच वर्षों में दो करोड़ रुपये प्रति विद्यालय की दर से वित्तपोषण दिया जाना है।

प्रदेश सरकार द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि इन विद्यालयों को पहले से ही प्रदेश में चल रहे राजकीय मॉडल संस्कृति विद्यालयों की भाँति रूपान्तरित किया जाएगा जिनमें अंग्रेज़ी माध्यम का एक अनिवार्य अनुभाग होगा, सभी संकायों की व्यवस्था होगी तथा इन्हें सीबीएसई बोर्ड से जोड़ा जाएगा। भारत-सरकार द्वारा इस वर्ष के लिए बजट की पहली किस्त भी स्वीकृत कर दी गई है। इन विद्यालयों के लिए चार वर्ष की विद्यालय विकास योजना (School Development Plan) बन गई है। विद्यालयों के नामकरण आदि का कार्य हो गया है तथा इनमें नामांकन आदि का कार्य जारी है। एचकेआरएन के माध्यम से इनके रिक्त पदों को भरने की स्वीकृति माननीय मुख्यमंत्री कार्यालय से प्राप्त हो गई है। इन विद्यालयों की ढाँचागत सुविधाओं के विस्तार का तथा अन्य आवश्यक शैक्षणिक सुविधाओं का कार्य आरम्भ किया जाना है तथा अगले शैक्षणिक सत्र यानी 2024-25 से इन में पीएम श्री के मापदण्डों के अनुसार विधिवत कक्षायें आरम्भ हो जाएँगी।

पीएम-श्री योजना के लिए 8526.76 लाख रुपये स्वीकृत-

हरियाणा के लिए भारत सरकार द्वारा वर्ष 2023-24 के लिए 124 स्कूलों के लिए 8526.76 लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं। यानी सरकार उदारता के साथ शिक्षा के क्षेत्र में निवेश कर रही है। पर्यावरण के अनुकूल का उपयोग करते हुए स्कूल 'हरित' होंगे।

पीएम श्री योजना का उद्देश्य-

पीएम श्री योजना का मुख्य उद्देश्य भारत के 14,500 पुराने स्कूलों का अपग्रेडेशन करना है ताकि इन स्कूलों को नया स्वरूप देकर बच्चों को स्मार्ट शिक्षा से जोड़ा जा सके। पीएम श्री योजना के तहत अपग्रेड किए गए स्कूलों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सभी घटकों की झलक दिखाई देगी और ये अनुकरणीय स्कूलों की तरह काम करते हुए अन्य स्कूलों का मार्गदर्शन करेंगे। इन स्कूलों का उद्देश्य न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, अध्ययन और संज्ञानात्मक विकास होगा, बल्कि 21वीं सदी के कौशलों की जरूरतों के अनुरूप समग्र और पूर्ण विकसित नागरिकों का निर्माण करना भी है। पीएम श्री योजना के माध्यम से अब गरीब बच्चे भी स्मार्ट स्कूलों से जुड़ सकेंगे जिससे भारत के शिक्षा क्षेत्र को एक अलग पहचान मिलेगी।

पीएम श्री योजना में क्या खास होगा-

- पीएम श्री योजना के तहत अपडेट किए गए पीएम श्री स्कूलों में नवीनतम तकनीक, स्मार्ट शिक्षा और आधुनिक ढाँचा होगा।
- पीएमश्री स्कूलों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के सभी घटकों की झलक होगी।
- ये स्कूल अपने आसपास के अन्य स्कूलों का मार्गदर्शन करेंगे।
- इन स्कूलों में प्री-प्राइमरी से लेकर 12वीं तक की पढ़ाई होगी।
- इसके अलावा इनमें अत्याधुनिक लैब स्थापित की जाएँगी, जिससे विद्यार्थी किताबों के अलावा प्रायोगिक क्रियाओं से भी सीख सकें।
- प्री-प्राइमरी एवं प्राइमरी के बच्चों के लिए खेल पर फोकस किया जाएगा, जिससे उनका शारीरिक विकास हो सके।
- यह योजना पीएम श्री स्कूलों को आधुनिक जरूरतों के हिसाब से अपग्रेड करेगी, जिससे बच्चों की आधुनिक जरूरतें पूरी होंगी और वे एक अच्छे माहौल में शिक्षा को ग्रहण कर सकेंगे।

सभी को पूरी आशा है कि इस योजना के तहत अपग्रेड किए गए स्कूलों के माध्यम से सामान्य लोगों के बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा, जिससे उनका भविष्य निखरेगा और वे सुशिक्षित होकर भारत के विकास में अपनी भागीदारी निभा सकेंगे।

प्रधानाचार्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सैक्टर-6
पंचकूला

शिक्षा का नया सफर 21वीं सदी के एआई कौशल के साथ

मनोज कौशिक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, शिक्षा की समग्रता के महत्त्व को पहचानते हुए, हमें उन क्षेत्रों की खोज करने को प्रेरित करती है जो अकादमिक सीमाओं से परे हैं। यह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना करती है, जो छात्रों को न केवल परीक्षाओं के लिए बल्कि जीवन को तेजी से विकसित होते विश्व की चुनौतियों के लिए भी तैयार करती है। नयी शिक्षा नीति 21 वीं सदी के कौशल के विकास पर ध्यान केंद्रित करने और उसे वर्तमान शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने पर पूर्ण जोर देती है। छात्रों के लिए ये कौशल, तेजी से बदलती दुनिया में पनपने और आधुनिक कार्यबल (वर्कफोर्स) की माँगों के लिए तैयार होने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

21 वीं सदी के कौशल के रूप में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक शक्तिशाली उपकरण है। एनईपी-2020 शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के महत्त्व को स्वीकार करती है और शिक्षा प्रणाली में इसके एकीकरण की वकालत करती है। हालांकि नीति दस्तावेज एआई के बारे में व्यापक विवरण प्रदान नहीं करता है, लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच को बढ़ाने में एआई और प्रौद्योगिकी के महत्त्व को ये पहचानते हैं। साथ ही यह एक अधिक प्रौद्योगिकी-सक्षम और लचीली शिक्षा प्रणाली का आह्वान करता है। एआई के कार्यान्वयन और पाठ्यक्रम में इसके एकीकरण में सुविधा या चुनौतियाँ राज्य और समय के साथ अलग-अलग हो सकती हैं, क्योंकि ये शिक्षा प्रणाली के विकास के साथ-साथ चलती हैं, लेकिन छात्रों के लाभ के लिए एआई और डिजिटल उपकरणों का प्रभावी ढंग से लाभ उठाने के लिए शिक्षकों के पेशेवर विकास पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता सदैव रहती है।

छात्रों के लिए 21 वीं सदी के कौशल क्यों महत्त्वपूर्ण हैं ?

21 वीं सदी के सीखने और नवाचार के कौशल आज निम्नलिखित कारणों से मायने रखते हैं-

छात्रों को उन नौकरियों के क्षेत्रों के लिए तैयार किया जा रहा है जो अभी तो लोकप्रिय नहीं हैं, लेकिन आने वाले समय में ये अति महत्त्वपूर्ण होने वाले हैं। इस तरह की करियर तत्परता के कौशल से उन्हें लैस करने की आवश्यकता है।

सॉफ्ट स्किल्स, उच्च-स्तरीय पाठ्यक्रमों और कार्यस्थलों में सफलता हेतु आवश्यक हैं।

इंटरनेट युग ने छात्रों के लिए विशाल जानकारी सुलभ बना दी है। उन्हें इस जानकारी को संसाधित करने और विश्लेषण करने के लिए कौशल की आवश्यकता है।

पाठ्यपुस्तकों से सैद्धांतिक ज्ञान अब पर्याप्त नहीं है। छात्रों को जटिल समस्याओं को कुशलतापूर्वक हल करने के लिए उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग को समझने की आवश्यकता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) क्या है ?

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या एआई, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक रोमांचक और क्रांतिकारी अवधारणा है। इसमें बुद्धिमान मशीनों का निर्माण शामिल है जो मनुष्यों के समान सोच सकती हैं, सीख सकती हैं और निर्णय ले सकती हैं। ये मशीनें सूचना को संसाधित (प्रोसेस) करने और विभिन्न स्थितियों के अनुकूल होने के लिए कंप्यूटर प्रोग्राम का उपयोग करती हैं। एआई हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, सिरी/अलेक्सा जैसे वॉयस असिस्टेंट से लेकर सेल्फ-ड्राइविंग कारों तक, और यह स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की आवश्यकता क्यों है ?

21 वीं सदी के कौशल के रूप में एआई के महत्त्व

को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि ये कौशल छात्रों के लिए एक ऐसी दुनिया में नेविगेट करने और पनपने के लिए आवश्यक हैं जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और स्वचालन (Automation) से तेजी से प्रभावित है। आइये जानते हैं कि छात्रों को यह ज्ञान, भविष्य के लिए किन किन दक्षताओं में निपुण कर सकता है -

समस्या समाधान (Problem Solving)- एआई एक सुपर-स्मार्ट समस्या हल करने वाले की तरह है। यह हमें मनुष्यों की तुलना में तेजी से और अधिक सटीक रूप से जटिल समस्याओं के समाधान खोजने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य सेवा में एआई बीमारियों का निदान करने और उपचार के विकल्पों का सुझाव देने के लिए विशाल मात्रा में डेटा का विश्लेषण कर सकता है।

महत्त्वपूर्ण सोच और समस्या समाधान(Critical Thinking and Problem Solving)-

21 वीं सदी के कौशल जैसे महत्त्वपूर्ण सोच और समस्या सुलझाना आदि एआई के संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक हैं। छात्रों को जानकारी का विश्लेषण करने और एआई-संचालित समाधानों का आकलन करने की आवश्यकता है, उन्हें एआई प्रौद्योगिकी के नैतिक प्रभावों के बारे में गंभीर रूप से सोचने की भी आवश्यकता है।

रचनात्मकता और नवाचार (Creativity and Innovation)-

एआई के लिए नए उपयोगों की कल्पना करने और

नए एआई-आधारित समाधान विकसित करने के लिए छात्रों के लिए रचनात्मकता और नवाचार महत्त्वपूर्ण हैं। ये कौशल छात्रों को एआई एल्गोरिदम, अनुप्रयोगों और प्रणालियों को डिज़ाइन करने में सक्षम बनाते हैं जो वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल कर सकते हैं।

संचार और सहयोग(Communication and Collaboration)-

एआई सिस्टम या एआई अनुप्रयोगों को विकसित करने वाली टीमों के साथ काम करने वाले छात्रों के लिए 'प्रभावी संचार और सहयोग कौशल' (इफेक्टिव कम्युनिकेशन एंड कोऑपरेशन स्किल्स) महत्त्वपूर्ण हैं। एआई सिस्टम को निर्देश देने के लिए स्पष्ट संचार महत्त्वपूर्ण (क्लियर कम्युनिकेशन) है, जबकि सहयोग एआई से जुड़ी जटिल चुनौतियों को हल करने में मदद करता है।

सूचना और डिजिटल साक्षरता (Information and Digital Literacy)-

एआई के युग में, छात्रों को सूचना और डिजिटल साक्षरता में कुशल होना चाहिए। उन्हें यह समझने की जरूरत है कि एआई एल्गोरिदम कैसे काम करते हैं और एआई द्वारा संचालित सूचनाओं और सुविधाओं तक कैसे पहुँचें।

नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी (Ethical and Social Responsibility)-

एआई के नैतिक और सामाजिक प्रभावों को

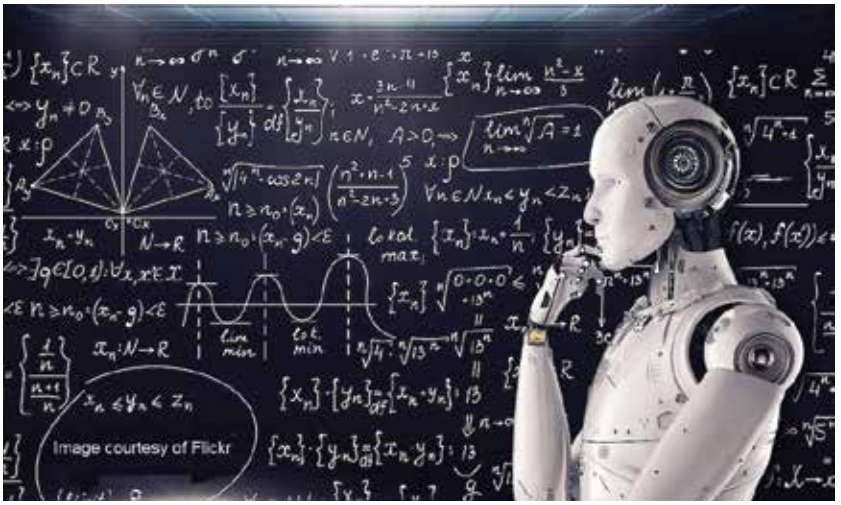

समझना 21वीं सदी के कौशल का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। छात्रों को एआई पूर्वाग्रह, गोपनीयता और समाज पर एआई के प्रभाव से संबंधित मुद्दों के बारे में पता होना चाहिए। उन्हें एआई प्रौद्योगिकी के जिम्मेदार उपयोगकर्ता और निर्माता होने की आवश्यकता है।

लचीलापन और अनुकूलनशीलता (Flexibility and Adaptability)-

एआई प्रौद्योगिकियाँ लगातार विकसित हो रही हैं। मज़बूत अनुकूली और लचीले कौशल वाले छात्र आसानी से नए एआई टूल और प्लेटफार्मों को सीख सकते हैं और अनुकूलित कर सकते हैं, जिससे वे सरलता से एआई सम्बंधित करियर अपना सकते हैं।

उद्यमिता और व्यावसायिक कौशल (Entrepreneurship and Vocational Skills)-

एआई स्टार्टअप और उद्यमों में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए उद्यमशीलता कौशल मूल्यवान हैं। वे अभिनव व्यावसायिक विचारों के लिए एआई का लाभ उठा सकते हैं। एआई में व्यावसायिक कौशल, जैसे कोडिंग और डेटा विश्लेषण छात्रों को विशिष्ट करियर पथ पर भी अग्रसर कर सकते हैं।

बहुभाषावाद (Multilingualism)-

बहुभाषावाद एआई के संदर्भ में फायदेमंद है, क्योंकि यह एआई सिस्टम की प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (नेचुरल लेंगुएज प्रोसेसिंग- एनएलपी) और अनुवाद क्षमताओं को बढ़ा सकता है। कई भाषाओं में कुशल छात्रों को भाषा प्रौद्योगिकी और एआई स्थानीयकरण में एआई से संबंधित अवसर मिल सकते हैं।

मूल्यांकन और सीखना (Assessment and Learning)-

एआई व्यक्तिगत सीखने में सहायता कर सकता है, छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए शैक्षिक सामग्री को अनुकूलित कर सकता है। मजबूत 21 वीं सदी के कौशल वाले छात्र अपनी शिक्षा को बढ़ाने और नए कौशल को अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त करने के लिए एआई-संचालित शिक्षण प्लेटफार्मों का लाभ उठा सकते हैं।

शिक्षा के इस नए सफर में शिक्षा विभाग हरियाणा -

1. कक्षा छठीं से बारहवीं तक कोडिंग प्रशिक्षण- हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् (एचएसएसपीपी) एवं एससीईआरटी द्वारा संयुक्त रूप से कक्षा छठीं से बारहवीं तक के छात्रों और अध्यापकों के लिए कोडिंग के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी है। इसके अंतर्गत प्रथम चरण में 372 मॉडल संस्कृति विद्यालयों के पीजीटी कंप्यूटर साइंस को प्रशिक्षित किया जा चुका है। दूसरे चरण में, विद्यालय में ऑनलाइन प्लेटफार्म मेराकी माध्यम से टीचिंग लर्निंग मैटेरियल कोडिंग गतिविधियाँ तथा प्रोजेक्ट्स साझा किये जा रहे हैं। अध्यापकों को इस तीन वर्षीय प्रोजेक्ट के दौरान क्षमता संवर्धन के साथ-साथ छात्रों को इस विधा में पारंगत करना इस परियोजना का मूल उद्देश्य है।

2. टेक स्कूल क्लब्स की स्थापना- विभाग द्वारा चलाये गए विभिन्न डिजिटल पहलों का लक्ष्य विद्यालयी शिक्षा में गुणवत्ता लाना है, परन्तु उत्कृष्ट उद्देश्यों और उन्नत संसाधनों की सुलभता ही गुणवत्ता लाने के लिए पर्याप्त हो यह आवश्यक नहीं। इसके लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों के प्रशिक्षण के साथ-साथ अभिभावकों व समुदाय की सहमति, सहयोग और समझ बनाने की नितांत आवश्यकता होती है, ताकि टेक्नोलॉजी के दुष्प्रभावों से सचेत रहते हुए इसका पूर्ण लाभ उठाया जाए। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर एससीईआरटी हरियाणा की ओर से टेक स्कूल क्लब्स की स्थापना की जा रही है। यद्यपि सभी विद्यालय इस क्लब के लिए स्वैच्छिक आवेदन दे सकते हैं, लेकिन प्रथम चरण में प्रमुखता के आधार पर प्रति खंड 10 विद्यालयों के टेक क्लबों को खंड एवं जिले-स्तर की मेंटरिंग टीमों के संरक्षण में विकसित किया जायेगा।

3.आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में शिक्षकों और विद्यार्थियों में जागरूकता- एससीईआरटी हरियाणा की ओर से सरकारी विद्यालयों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की समझ विकसित करने के लिए IBM के सहयोग से 240 मास्टर ट्रेनर्स को प्रशिक्षण दिया गया है। इनके माध्यम से अब छात्रों को एआई आधारित प्रोजेक्ट्स पर ऑनलाइन एवं ऑफ लाइन मैन्युअल /सामग्री उपलब्ध करायी जायेगी।

4. विद्यालय में पज़ल कॉर्नर की स्थापना- एससीईआरटी, हरियाणा ने सभी स्कूलों को साप्ताहिक आधार पर नोटिस बोर्ड या पहेली-कॉर्नर में कम से कम एक पहेली या चुनौती प्रदर्शित करने का निर्देश दिया है। शनिवार को एक अवधि उसी के लिए समर्पित है जहाँ शिक्षक केवल मंच/अवसर प्रदान कर सकता है (समाधान बताने के लिए नहीं)। यह पहल न केवल छात्रों के बीच महत्त्वपूर्ण सोच और समस्या सुलझाने के कौशल को बढ़ावा देगी, बल्कि सांस्कृतिक जागरूकता और गर्व को भी बढ़ावा देगी, क्योंकि भारत में पहले भी पहेलियों को वास्तविक जीवन में पूछने की संस्कृति थी।

सारांश यह है कि 21 वीं सदी के कौशल और एआई निकटता से जुड़े हुए हैं। जो छात्र इन कौशलों को विकसित करते हैं, वे एआई तकनीक के साथ जुड़ने, इसके उपयोग के बारे में उचित निर्णय लेने के लिए तैयार हो पायेंगे। वे एक जिम्मेदार और अभिनव तरीके से जटिल समस्याओं का हल करने के लिए और इसका लाभ उठाने के लिए बेहतर रूप से लैस होंगे। एआई में विभिन्न उद्योगों और क्षेत्रों को आकार देने की क्षमता है, इसीलिए 21 वीं सदी के कौशल में एक मज़बूत नींव वाले छात्रों को भविष्य के विकसित नौकरी बाजार में केवल प्रतिस्पर्धात्मक लाभ ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जीवन में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त होगा।

सरकारी स्कूलों में एआई एकीकरण सरकारी स्कूलों की शिक्षा में क्रांति ला सकता है। इसके लिए इसकी प्रभावशीलता के नियमित रूप से निगरानी एवं मूल्यांकन की आवश्यकता होगी। आवश्यक सुधार करने के लिए शिक्षकों, छात्रों और माता-पिता से प्रतिक्रिया एकत्र की जा सकती है । यह सीखने के व्यक्तिगत अनुभव प्रदान कर सकता है, जिससे छात्रों के लिए शिक्षा अधिक प्रभावी और आकर्षक हो सकती है। शिक्षक प्रशिक्षण, बुनियादी ढाँचे और तकनीकी कंपनियों के साथ साझेदारी में निवेश करके, सरकार डेटा को गोपनीयता और सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए शिक्षा में एआई को सफलतापूर्वक लागू कर सकती है। सरकारी स्कूलों में एआई को अपनाना एक उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक कदम है, जहाँ हर छात्र के पास उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित होगी।

वरिष्ठ विशेषज्ञ एवं विभागाध्यक्ष
शैक्षिक तकनीक विभाग
एससीईआरटी हरियाणा, गुरुग्राम

नाटक : शिक्षण का बेहतरीन उपकरण

संजीव कुमार

नाटक को प्रदर्शन के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें संघर्ष, भावनाओं, संवाद और कार्रवाई के माध्यम से मानवीय अनुभवों का चित्रण शामिल है। यह आमतौर पर एक कहानी या स्थिति प्रस्तुत करता है, जो दर्शकों की भावनाओं को जोड़ता है, जिससे तनाव उत्तेजना या सहानुभूति जैसी तीव्र भावनाएँ पैदा होती हैं।

शिक्षा में नाटक का प्रयोग छात्रों के सीखने को विकसित करने के लिए एक अमूल्य तकनीक है। शिक्षक नाटकीय प्रक्रिया में सीधे भाग लेने और उसे अंदर से प्रभावित करने में सक्षम है। यह एक दृश्य स्थापित करने और सीधे विद्यार्थियों को शामिल करने का एक त्वरित तरीका है। बच्चों की उत्सुकता से इसमें शामिल होने की प्रबल संभावना है। शिक्षक को इसके लिए महान अभिनय कौशल की आवश्यकता नहीं होती। इसे अपनी आवाज़ के स्वर और शारीरिक भाषा को सूक्ष्मता से बदलकर किया जा सकता है। यदि शिक्षक कहानी सुनाते समय पात्रों के लिए अलग-अलग आवाज़ों का प्रयोग करता है तो वह निश्चित रूप से एक शिक्षक के साथ-साथ नाटककार की भूमिका में होता है। एक शिक्षक नाटककार के रूप में विभिन्न प्रकार की भावाभिव्यक्ति करके छात्रों को इस भाव के साथ जोड़ने में सक्षम होता है। इससे विद्यार्थियों का ध्यान शिक्षक की ओर ही रहता है और वे मनोरंजन के साथ-साथ पाठ्य विषय से भावात्मक रूप से भी जुड़ पाते हैं।

नाटक वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में सहानुभूति, समझ, भावात्मक बुद्धिमत्ता और आत्मविश्वास को बढ़ावा देता है। छात्रों को कम उम्र से ही नाटक में शामिल करना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इससे उन्हें जीवन भर काम आने वाली आवश्यक क्षमताएँ प्रदान की जा सकती हैं। नाटक छात्रों को स्वतंत्र रूप से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का मौका देता है। बच्चों को बातचीत करना बहुत पसंद होता है, नाटक में शिक्षक उन्हें यही करने को

कहते हैं। इससे छात्रों की सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है। नाटक गतिविधियाँ मज़ेदार होती हैं -जो सीखने को यादगार व आनंददायक बनाती हैं।

नाटक केवल भाषा अध्यापक के लिए ही आवश्यक नहीं है, बल्कि प्रत्येक विषय के अध्यापक के लिए एक आवश्यक उपकरण है। नाटक वास्तविक जीवन का हिस्सा है और छात्रों को जीवन की समस्याओं से निपटने के लिए तैयार करता है। इससे छात्रों में सामाजिक कौशल विकसित होता है, शैक्षिक तनाव कम होता है और रचनात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है। नाटक में छात्र सक्रिय रहते हैं। इससे उनमें एकाग्रता, कल्पनाशीलता, सहयोग व समझ विकसित होती है और मौखिक व शाब्दिक संचार करने में कुशल बनते हैं।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग की सराहनीय पहल -

शिक्षण में नाटक के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग ने सराहनीय पहल की है। हरियाणा पावर यूटिलिटीज की पहल पर स्कूल शिक्षा विभाग हरियाणा के सहयोग से एचएसवीपी के सान्निध्य में 18 सितंबर से 27 सितंबर, 2023 तक एक नाट्य लेखन कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न विषयों के 30 शिक्षकों ने भाग लिया। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग के तत्कालीन निदेशक डॉ. अंशज सिंह ने इस कार्यशाला का उद्घाटन किया व हरियाणा पावर यूटिलिटीज के अध्यक्ष श्री पीके दास समापन समारोह में शामिल हुए। डॉ. अंशज सिंह ने कहा कि सभी शिक्षक जब पाठ्यक्रम को रंगमंच के माध्यम से प्रस्तुत करेंगे तो विद्यार्थियों को ज्ञान ग्रहण करने का सुगम मार्ग प्राप्त होगा, पाठ्यक्रम नीरस लगने की बजाय रोचक लगेगा।

इस कार्यशाला में शिक्षकों ने नाटक लेखन की विभिन्न बारीकियों को जाना व तीन नाटकों की रचना की। उन्होंने निश्चय किया कि हम नाटक का शिक्षण में इस प्रकार रोचकता से प्रयोग करेंगे कि अन्य अध्यापक भी इससे प्रभावित होंगे और शिक्षण में नाटक के प्रयोग में रुचि लेंगे।

पीजीटी हिंदी
राआसंवमा विद्यालय सेक्टर 20, पंचकूला

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नाटक का प्रयोग एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है। इससे कक्षा शिक्षण के वातावरण को सजीव बनाकर नीरसता से बचा जा सकता है। नाटक की विद्यार्थियों पर अमिट छाप पड़ती है। नाटक के द्वारा जटिल अवधारणाओं को भी सरलता से समझाया जा सकता है। इसका विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सरिता
पीजीटी गणित
रावमावि धामण, खंड-मोरनी, पंचकूला, हरियाणा

सुनहरे भविष्य की ओर ले जाती कला-कार्यशालाएँ

डॉ. ओमप्रकाश कादयान

इसमें कोई संदेह नहीं कि जीवन को बेहतरीन तथा सुव्यवस्थित ढंग से जीने के लिए कला हमारे लिए आवश्यक, उपयोगी व महत्त्वपूर्ण है। कला हमें जीना सिखाती है, हमारा मनोरंजन करती है, संकीर्णताओं व तनाव से दूर रखती है, जीवन को व्यस्त व आनन्दित करती है, लोगों से जोड़ती है, कलाकार को समाज से जोड़े रखती है, सम्मान दिलवाती है, हमें भटकने से बचाती है तथा हमें रोज़गार भी देती है। जहाँ कला संस्कारित करती हुई समाज व देश के लिए कुछ बेहतरीन करने को उत्साहित करती है, वहीं कला घर आँगन, विद्यालय, दफ्तर, छोटे-बड़े भवनों को सजाने में काम आती है। किन्तु यह एक विडम्बना ही कही जाएगी कि अगर हम विद्यालयों की बात करें तो लम्बे अर्से तक कला व कला विषय उपेक्षित रहा है। दूसरी तरफ ये एक सराहनीय व प्रेरणादायक पहल भी है कि पिछले कुछ वर्षों से कला के महत्त्व व उपयोगिता को हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग ने समझा तथा कला के विकास के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण कदम उठाए। जहाँ नौवीं से बारहवीं के कोर्स में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए, वहीं कला कार्यशालाओं का आयोजन आरम्भ किया। शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारियों की सकारात्मक पहल से उपजी सृजनात्मक व कलात्मक योजनाओं से हरियाणा के विद्यालयों में कला का आवश्यक माहौल बनता जा रहा है। अन्य विषयों के शिक्षकों को भी कला की महत्ता का एहसास हो रहा है। फिर नई शिक्षा नीति में भी कला को अधिक सम्मान मिलने वाला है। हरियाणा के विद्यालयों में सृजनात्मकता लाने, विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने, कला के द्वारा जीवन को सुन्दर बनाने के साथ-साथ इसे रोज़गारोन्मुख बनाने के लिए, लोक-कला को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए 17 जुलाई से 5 सितम्बर, 2023 तक सुपवा विश्वविद्यालय, रोहतक में ललित कला कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन 17 जुलाई को विश्वविद्यालय के कुलपति गजेन्द्र चौहान ने किया। रोहतक की जिला शिक्षा अधिकारी मनजीत मलिक भी इस अवसर पर मौजूद रहीं। उद्घाटन के अवसर पर कुलपति महोदय ने कहा कि कलाकार समाज के भविष्य को आकार देते हैं, लेकिन इसके लिए कलाकार को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। उन्होंने कहा कि जो देश सभ्यता या पीढ़ी अपनी संस्कृति को भूल जाती है उसका सांस्कृतिक पतन शुरू हो जाता है, इसलिए जरूरी है कि हम अपनी जड़ों से जुड़कर विकास करते रहें, नए विचारों, नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ते रहें। शिक्षा विभाग

का प्रयास अनुकरणीय है।

इस कार्यशाला में लोककला को अधिक महत्त्व दिया गया, ताकि वर्तमान पीढ़ी अन्य प्रदेशों की कला, लोककलाओं के साथ-साथ हरियाणवी संस्कृति से परिचित हो सके। लोक कला हजारों वर्षों से पीढ़ी दर पीढ़ी समाज का मार्गदर्शन, मनोरंजन करती आई है। दुनिया के किसी भी देश, राज्य, अंचल के विकास व संचालन में लोक कलाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। लोक कला हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को समृद्ध करती हुई सदा आगे बढ़ी है। शिक्षा विभाग द्वारा कला-शिक्षकों व विद्यार्थियों के लिए लगाए जा रहे कला शिविर या कार्यशाला साधारण नहीं हैं। ये कार्यशालाएँ वे कार्यशालाएँ हैं, जहाँ अपने-अपने क्षेत्र में सिद्धहस्त कलाकार शिक्षक भी बहुत कुछ सीख रहे हैं। नई-नई ऊर्जा ग्रहण करके, नए जोश व उत्साह के साथ अपना सृजनात्मक कार्य करते हैं व अपनी कला का बेहतर प्रदर्शन करते हैं। हर व्यक्ति हर विधा में पारंगत नहीं होता, किंतु इन कार्यशालाओं में प्रतिभागी शिक्षक कला की कई विधाओं में बहुत कुछ ऐसा सीखकर, ग्रहण करके जाते हैं, जिनका उपयोग अपने विद्यालयों में करके विद्यार्थियों की कला में रुचि-वृद्धि कर सकते हैं।

इस बार कार्यशाला में नई बात यह थी कि इसमें कक्षा नौवीं से बारहवीं तक के फाइन-आर्ट के विद्यार्थी भी शामिल किये गए। ड्राइंग अध्यापक से ललित कला प्राध्यापक पदों पर पदोन्नत हुए शिक्षकों के साथ-साथ पाँच दिवसीय हर कार्यशाला में तीन या चार जिलों के 15-15 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमें छात्र-छात्राएँ करीब बराबर के प्रतिभागी थे। शिक्षा विभाग इन कार्यशालाओं की सफलता के लिए काफी धन-राशि खर्च कर रहा है। सभी विद्यार्थियों व प्रतिभागी शिक्षकों के किराये, खाने-पीने, रहने-ठहरने, प्रशिक्षकों आदि का सारा खर्च खुद शिक्षा विभाग द्वारा किया गया, जो सराहनीय है। यही कारण है कि दूसरे कई राज्यों के शिक्षा विभाग हरियाणा से प्रेरणा ले रहे हैं।

कला एक ऐसी विधा है जो हर व्यक्ति को प्रभावित करती है, अच्छी लगती है। कला जीवन जीने की सही राह दिखाती है। बहुत कुछ ऐसा सिखाती है जिससे हम अपने जीवन को सजा व सँवार सकते हैं। कला कार्यशालाओं के माध्यम से शिक्षा-विभाग भी कुछ ऐसा ही सार्थक प्रयास कर रहा है। इन कार्यशालाओं की प्रदेश संयोजक कार्यक्रम अधिकारी अमनप्रीत कौर ने बताया कि कार्यशाला लगाने का शिक्षा विभाग का उद्देश्य है राजकीय विद्यालयों में पढ़ा रहे कला शिक्षकों को अधिक ऊर्जावान तथा कला में निपुण बनाना ताकि उनका सीधा फायदा विद्यार्थियों को हो सके। वे कला को व्यवसाय के रूप में भी अपना सकते हैं।

इस कार्यशाला में कला प्राध्यापकों व विद्यार्थियों को निपुण बनाने के लिए पेंटिंग, क्ले-मॉडलिंग, पोस्टर मेकिंग, मांडणा कला, सांझी कला, चीतन कला, लीपन, मार्बल आर्ट, पेपरमेशी आर्ट, डेकोरेटिव फेस मास्क, डेकोरेटिव वुड आर्ट, डेकोरेटिव पेपर फोल्डर आदि कलाएँ अपने-अपने क्षेत्र में दक्ष प्रशिक्षकों ने सिखाईं। प्रसिद्ध कलाकार डॉ. राजेन्द्र जांगड़ा ने पेपरमेशी, रेजिन आर्ट, पोट डेकोरेशन, गीता जांगड़ा ने लीपन आर्ट व मांडणा डॉ. दुर्गेश ने कैलीग्राफी पोट्रेट, युवा कलाकार राजेन्द्र भट्ट ने डेकोरेटिव मास्क, म्यूरल, डॉ. शिवा ने जूट बैग मेकिंग फोल्डर पेपर फ्लावर्स, वॉल हैंगिंग, अश्विनी कुमार ने साँझी व चीतन कला, सुनीता अहलावत ने ग्रीटिंग कार्ड, फेब्रिक पेंटिंग, फाइल कवर डेकोरेशन में प्रतिभा दिखाई। वैसे तो विद्यार्थियों के लिए ये सब तरह की कलाएँ उपयोगी, रोचक व महत्त्वपूर्ण हैं, किन्तु पेपरमेशी आर्ट तथा डेकोरेटिव वुड आर्ट में बच्चों ने अधिक रुचि दिखाई,

क्योंकि ये उनके लिए नई तथा अधिक रुचिकर थीं।

कलाकार व विद्यार्थियों ने क्ले, लीपन, प्रिंट मेकिंग व पेपर मैसी पैंटिंग, डेकोरेटिव आर्ट में जो कलाकृतियाँ बनाईं, उससे लगता है कि शिक्षा विभाग में कार्यरत कला शिक्षकों व विद्यार्थियों में प्रतिभाओं की व अच्छे शिक्षकों की कोई कमी नहीं । पेपरमेशी आर्ट में तो कलाकार शिक्षकों, विद्यार्थियों ने और भी कमाल कर दिया। सदियों से हमारे लोक में पेपर मैसी का उपयोगी काम होता रहा है। ये हरियाणवी लोक कला का अहम हिस्सा भी रहा है, किंतु अब इस कला को बाज़ार का रूप दिया जा रहा है, जो अच्छी बात है। हरियाणा के जाने माने कलाकार हिसार निवासी डॉ. राजेश जांगड़ा तथा उनकी धर्मपत्नी गीता जांगड़ा ने अपनी कला दक्षता व समझ से उपयोगी पेपर मैसी आर्ट को निखार, सँवार कर ड्राइंग रूम तक पहुँचा दिया। बनाने की प्रक्रिया में थोड़ा बदलाव कर उसे ज्यादा सुंदर व सहज बना दिया । सदियों से ये कला एक दायरे तक सीमित थी, अब ये कला विस्तार व रफ्तार पकड़ चुकी है। इस कला में अब सुंदर-सुंदर आकृतियाँ बनाई जा रही हैं। हरियाणवी या अन्य राज्यों की संस्कृति की झलक, जनजीवन के मनोरम दृश्य, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदी, पहाड़ झरने सब कुछ इस कला का हिस्सा बनते जा रहे हैं। इनको विस्तार व संरक्षण देने का कार्य कर रहा है हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग। वर्कशॉप के दौरान कला में हर कहीं हरियाणवी संस्कृति व प्रकृति की झलक दिखाई दे रही थी। पेपर मैसी व क्ले मॉडलिंग में हरियाणवी जनजीवन, खेती-बाड़ी, परंपरागत दृश्य, सांस्कृतिक विरासत व प्रकृति की झलक थी तो मांडणे, लीपन में हरियाणवी लोक-कला की झलक दिखाई दे रही थी।

इस कार्यशाला की खासियत यह रही कि इससे जो सृजनात्मक कार्य सामने आया वो अति सुंदर, आकर्षक, उपयोगी तथा अविश्वसनीय-सा लग रहा था। इन कार्यशालाओं में शिक्षक, छात्र कलाकारों ने जो कार्य किया, जो गज़ब था तथा काम इतना हुआ कि एक आर्ट-गैलरी बन सकती है। इस काम की सार्थकता और भी तब बढ़ जाएगी जब इस कार्य को किसी आर्ट-गैलरी में रखा जाए या खास स्थानों, दफ्तरों में टाँगा जाए। एक स्मारिका भी छापी जा सकती है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित ये कला कार्यशालाएँ निःसंदेह उपयोगी, सार्थक तथा दूसरे राज्यों के लिए अनुकरणीय हो सकती हैं। इनके बेहतर परिणाम निकट भविष्य में देखने को मिलेंगे। इन आयोजनों से जहाँ शिक्षकों की कला में निखार आएगा, वहीं बच्चों की कला प्रतिभा निखारने में सहायक सिद्ध होंगे तथा हरियाणवी कला-संस्कृति को सरंक्षण व विस्तार मिलेगा। विकास की दौड़ में लुप्त होती हमारी लोक-कला को हम वास्तविक रूप से तो बचाने में अधिक कामयाब नहीं होंगे, किंतु यह भी बड़ी बात है कि हरियाणवी परंपरागत लोक कला को नए रूप, नए रंग में ढ़ालकर हम इसे ड्राइंग रूमों, दफ्तरों, संग्रहालयों, बड़े भवनों, विश्वविद्यालयों की दीवारों तक पहुँचाने में कामयाब होंगे। कला का ये नया रूप कलाकार को नाम, प्रसिद्धि तथा रोज़गार तीनों दे सकता है। इसका श्रेय शिक्षा-विभाग को

जाता है। ये कार्यशालाएँ सार्थक व उपयोगी सिद्ध होगीं।

कलाकारों की नज़र में कार्यशाला की उपयोगिता : हिसार के प्रसिद्ध चित्रकार राजेश जांगड़ा ने बताया कि पेपरमेशी कला सदैव हमारी परंपरागत लोक कला का हिस्सा रही है किंतु आधुनिकता के दौर में यह कला विलुप्त होती जा रही है। हमने इस शैली को पुनः जागृत करने के लिए परंपरागत रंगों के प्रयोग के साथ-साथ एक्रेलिक रंगों का प्रयोग प्रारंभ किया है और पेपर मैसी से सजावटी, आकर्षक कलाकृतियाँ निर्मित करके घरों, भवनों, ऑफिस आदि की दीवारों तक पहुँचाया है। हमारे इस प्रयास को देश-विदेश के भिन्न-भिन्न भागों में स्थान दिया गया है और पेपरमेशी से निर्मित कलाकृतियों को अत्यधिक सराहना मिल रही हे। कार्यशाला में ललित कला प्राध्यापकों द्वारा निर्मित कलाकृतियाँ बहुमूल्य हैं।

डॉ.गीता जांगड़ा, कला प्राध्यापिका राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नंगथला, हिसार के विचार हैं कि आधुनिकीकरण हमें हमारी परंपरागत लोक कलाओं से विमुख कर रहा है। लीपन कला सदैव से ही हम सभी के लिए आकर्षण का केंद्र रही है। घरों की दीवारों, दरवाज़ों, आलों-दीवारों को सजाने के लिए इस कला का प्रचलन हमेशा से रहा है, किंतु अब पक्के घरों, भवनों में इसका प्रचलन लगभग समाप्त हो चुका है। मैंने इस परंपरागत कला को पुनःजीवित करने के लिए भरसक प्रयास किए और कुछ प्रभावशाली प्रयोग किए।

राजेन्द्र भट्ट- कलाकार व ललित कला प्राध्यापक रामासंसीसै विद्यालय उकलाना का मानना है कि मानव सभ्यता के शैशव काल से ही चित्र मानव की भाषा है और ये चित्र सरल होने के साथ साथ उनके रीति-रिवाज और उनके किसी शुभ घटना के द्योतक होते थे। मुझे लगता है कि हरियाणा की लोक चित्रकला यहाँ के आम जनमानस के मन की भाषा है। अतः इसको प्रोत्साहन देना अति आवश्यक है, इसलिए मैंने हरियाणा की लोक-कला में छापा चित्र बनाया जो कि होते तो मात्र हाथ के निशान है, लेकिन इसमें मानव मन की सरलता और पवित्रता समाई होती है। मैं चाहता हूँ कि हरियाणा के नव युवा हरियाणा

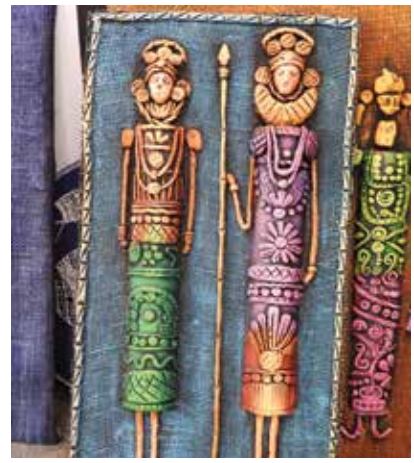

की संस्कृति से रूबरू हों।

कुशल चित्रकार दुर्गेश कुमार, राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नाहरी, सोनीपत का मानना है कि अच्छा शिक्षक वह है जो अपने शागिर्द की ज्ञान की प्यास बुझाने की जगह उसे और प्यासा बना दे। इस कार्यशाला ने बहुत-सी विधाएँ तकनीकी, शैलियों को परस्पर सीखने और सिखाने का अच्छा अवसर प्रदान किया। यह प्रशिक्षक, शिक्षक और छात्रों की अद्भुत त्रिवेणी थी, जिसमें सभी ने अपने अध्ययन, चिंतन, मनन एवं सृजनात्मक कौशल के बल पर नवीन सृजनात्मक संभावनाएँ प्रतिष्ठित कराईं। भविष्य में कला एवं कलाकृति के क्षेत्र में यह एक विशिष्ट सोपान सिद्ध होगी।

गुरुग्राम में रहने वाले ललित कला-प्राध्यापक कलाकार अश्विनी कुमार का कहना है कि इस प्रकार की कार्यशालाओं से न केवल एक दूसरे के कार्य की तकनीक साँझा होती है, बल्कि विचार भी साँझा होते हैं। इतने कलाकार जब एक साथ मिलकर कार्य करते हैं, तो उनमें नई ऊर्जा का संचार होता है, विचार-विमर्श से नए कार्य और कार्य क्षेत्रों पर ज़ोर होता है। बहुत सारे अनछुए व अनसुलझे पहलुओं को सुलझाने की दस्तक होती है। विद्वज्जनों से सीखने के अवसर पैदा होते हैं। सामाजिक ही नहीं वरन सभी मुद्दों पर चर्चाएँ होती हैं, जिनका समाज व आम जन से सीधा सरोकार है।

17 जुलाई से 5 सितंबर तक चली इस प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन 5 सितम्बर को बड़े उत्साह के साथ हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि रोहतक के उपायुक्त अजय कुमार थे। गैस्ट ऑफ ओनर सुपवा के रजिस्ट्रार गुंजन मलिक मनोचा थे। इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी मनजीत मलिक, कार्यक्रम अधिकारी व इस पूरे वर्कशॉप की इंचार्ज रही अमनप्रीत कौर तथा वर्कशॉप कोर्डिनेटर सुनीता अहलावत भी मौजूद थे। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग की कार्यक्रम अधिकारी अमनप्रीत कौर ने हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग के तत्कालीन निदेशक अंशज सिंह, अतिरिक्त निदेशक अमृता सिंह का धन्यवाद किया कि उनके आशीर्वाद व सहयोग से रोहतक में इतने बड़े स्तर पर फाइन-आर्ट वर्कशॉप का आयोजन हो सका। इस मौके पर उपायुक्त अजय कुमार ने कहा कि लोक कला हजारों वर्षों से पीढ़ी दर पीढ़ी समाज का मार्गदर्शन, मनोरंजन करती आई है। दुनिया के किसी भी देश, राज्य, अंचल के विकास व संवर्धन में कला, लोक कला का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। लोक कला हमारी सांस्कृतिक परंम्पराओं को समृद्ध करती हुई सदा आगे बढ़ी है। उन्होंने कहा कि मैंने पहली बार देखा कि किसी राज्य का शिक्षा विभाग कला को लेकर इतने बड़े स्तर पर कार्य कर रहा है। इसके लिए हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग के अधिकारी बधाई के पात्र हैं तो कला से जुड़े शिक्षक प्रशंसा के योग्य हैं। इस वर्कशॉप का सीधा फायदा विद्यार्थियों को मिलेगा। शिक्षा विभाग की ओर से इस मौके पर उपायुक्त को कला शिक्षकों व विद्यार्थियों द्वारा बनाए स्मृतिचिह्न भेंट किए गए।

राजकीय कन्या
वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही, फतेहाबाद, हरियाणा

युवा संसद : भविष्य नए भारत का

किसी भी राष्ट्र का युवा समाज को नई दिशा देकर उसे तरक्की के रास्ते पर अग्रसर करने की ताकत रखता है। जरूरत है तो उसे सही समय पर सही मार्गदर्शन देने की, जिससे उसकी क्षमता व ताकत का समाज व राष्ट्र हित में सही इस्तेमाल किया जा सके।

इसी मकसद से भारत सहित पूरी दुनिया में यूथ पार्लियामेंट यानि युवा संसद का आयोजन किया जाता है ताकि भावी पीढ़ी के विचारों को समझा और जाना जा सके। केंद्र सरकार के संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा देश के स्कूलों व कॉलेजों में युवा संसद का आयोजन किया जाता है। संसद की गरिमामयी व्यवस्था को जन-जन तक, खास कर युवाओं तक पहुँचाने में युवा-संसद की भूमिका अहम रही है। इस कार्यक्रम के जरिये एक आसान तरीके से युवाओं को संसदीय प्रक्रिया के बारे में समझाया जाता है।

युवा संसद के विचार की शुरुआत सबसे पहले 1962 में मुंबई में हुए चौथे अखिल भारतीय सचेतक सम्मेलन के दौरान हुई। इस सम्मेलन का उद्देश्य था संस्थाओं के माध्यम से मॉक-पार्लियामेंट का आयोजन, जो समय के साथ-साथ आगे चलकर युवा-संसद के नाम से जाना जाने लगा। 1965 में संसदीय कार्य-मंत्रालय ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में युवा संसद के आयोजन की योजना तैयार की। इस तरह पहली बार युवा संसद साल 1966-1967 के दौरान आयोजित हुई। जैसा कि हम सब जानते हैं कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है और हमारे लोकतन्त्र की जड़ें बहुत गहरी हैं। लोकतन्त्र की इस परंपरा का प्रमुख स्तंभ संसद है, जहाँ जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि देश के लिए कानून बनाते हैं। युवा संसद के तहत संसद की कार्यवाही, नीतियाँ और कानून बनाने में जन-प्रतिनिधियों की भूमिका जैसे पहलुओं को दर्शाया जाता है। युवा-संसद कार्यक्रम में, विधेयकों पर वास्तविक संसद के सदस्यों द्वारा कैसे चर्चा की जाती है, अपने-अपने क्षेत्र के विकास सहित अहम मुद्दों को कैसे उठाते हैं, प्रश्नकाल, शून्यकाल में सांसद अपनी बात कैसे रखते हैं, ये सब बताया जाता है।

युवा संसद के उद्देश्य-

1. सरल तरीके से विद्यार्थियों को संसद की कार्यवाही बताना
2. विद्यार्थियों को सार्वजनिक विषयों पर अध्ययन करवाना और उन्हें एक राय बनाने के लिए प्रोत्साहित करना
3. वाद-विवाद के बाद निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना
4. युवाओं में दूसरों के विचारों के प्रति सम्मान व सहिष्णुता का गुण पैदा करना
5. विद्यार्थियों को सामूहिक व्यवहार का प्रशिक्षण देना
6. विद्यार्थियों को देश की समस्याओं से अवगत करवाना
7. छात्रों में नेतृत्व का विकास करना
8. छात्रों में जन-साधारण की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना

संसदीय कार्य मंत्रालय पिछले 26 वर्षों से स्कूलों में युवा संसद प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाता रहा है। जोकि भविष्य के लिए आदर्श एवं जागरूक नागरिक तैयार करने, छात्रों में दूसरों के विचारों के प्रति सम्मान व सहिष्णुता का विकास करने के लिए यह एक सराहनीय पहल है। इस प्रकार के आयोजनों से बच्चों के विचारों में सकारात्मक बदलाव आए हैं। निःसंदेह युवा संसद प्रतियोगिताएँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध हो रही हैं।

आशा है कि भविष्य में युवा संसद प्रतियोगिता के महत्त्व को समझते हुए इसे राजनीतिशास्त्र विषय के पाठ्यक्रम में शामिल करने पर विचार किया जाएगा, क्योंकि जरूरी नहीं है कि कोई जन्मजात लीडर हो, लोग अपनी क्षमताओं को तराश कर भी उच्च मुकाम हासिल करते हैं। युवा संसद बच्चों में लीडर बनने की क्षमता को तराशने में अहम भूमिका अदा करती है।

राजनीति-शास्त्र के ज़्यादातर शिक्षकों का मानना है कि लोकतन्त्र की जड़ों को मजबूत करने के लिए तथा संसदीय परम्पराओं से युवाओं को जोड़ने के लिए युवा-संसद प्रतियोगिताओं का स्कूल व कॉलेज स्तर पर आयोजन एक सार्थक प्रयास माना जा सकता है।

शुरू से ही अपने छात्र-काल से पढ़ते आए हैं कि डेमोक्रेसी इज़ द गवर्नमेंट ऑफ द पीपल, फॉर द पीपल, बाय द पीपल होती है, परंतु युवा संसद के कार्यक्रम में भाग लेने के बाद यह बात ज्यादा अच्छी प्रकार से समझ में आ जाती है।

युवा संसद कार्यक्रम का मकसद युवाओं को राष्ट्रीय मुद्दों से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करना, आम आदमी की बात को समझना, अपनी राय बनाना और उसे स्पष्ट तरीके से व्यक्त करने में सक्षम बनाना है। युवा संसद के आयोजन से नीति-निर्माताओं को युवाओं के विचारों को भी जानने का मौका मिलता है, ताकि वे भविष्य में उन्हें ध्यान में रखकर अपनी नीतियाँ बना सकें।

कर्मवीर सिंह
पीजीटी राजनीति विज्ञान
राकवमावि मातन, झज्जर, हरियाणा

चित्ताकर्षक पोर्ट्रेट बनाता है पंचकूला का छात्र खुशहाल

वैसे तो हर तरह की कला मनुष्य को प्रभावित करती है, किन्तु इन विभिन्न कलाओं में चित्रकला शायद सबको अधिक आकर्षित करती है। ये अलग बात है कि कोई भी चित्रकार किस तरह की तथा किस विषय पर पेंटिंग बनाता है? जो कलाकार जितनी सुन्दर पेंटिंग बनाएगा, दर्शकों को वह पेंटिंग उतनी ही अधिक प्रभावित कर अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करती है। पेंटिंग में रंग बोलते हैं, वो अपनी बात कह जाते हैं, इसलिए अगर हम ध्यान से देखें, तो पता चलता है कि बच्चों को चित्र बनाना, रंग-बिरंगी तस्वीरें देखना अधिक अच्छा लगता है। चित्रकला बच्चों का प्रिय विषय होता है। कई बच्चे तो कमाल की चित्रकारी करते हैं। उन के द्वारा बनाए चित्र देखने से आभास होता है कि जैसे किसी बड़े और दक्ष चित्रकार ने ये चित्र बनाए हैं। अच्छे बाल चित्रकार जो अच्छी ड्राइंग करते हैं, वे ही रंग भी दक्षतापूर्ण भरते हैं। आवश्यकतानुसार रंगों का मिश्रण, उनका प्रयोग इस तरह से करते हैं कि चित्र सजीव-सा लगता है। ऐसा ही एक चित्रकार है- खुशहाल सिंह।

सार्थक राजकीय समेकित आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर-12 ए, पंचकूला की कक्षा बारहवीं में पढ़ने वाले कुशल चित्रकार छात्र खुशहाल सिंह ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल समेत अनेक राजनेताओं, महापुरुषों, देशभक्तों के सुन्दर पोर्ट्रेट बनाए हैं। वह प्रोर्ट्रेट में जिस दक्षता से रंग भरता है उससे लगता है कि किसी बड़े चित्रकार ने ये प्रोर्ट्रेट बनाए होंगे। वैसे तो खुशहाल सिंह कई तरह के रंगों का प्रयोग कागज, कैनवास, बोर्ड पर कर लेता है, किन्तु जलरंगीय चित्र ज्यादा बनाता है। इसके साथ-साथ संकीर्णताओं, साम्प्रदायिक दंगों पर प्रभावशाली पेंटिंग बनाई हैं। उसके चित्रों को देखने से लगता है कि वह बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण, कटते जंगल, दूषित होती हवा,

अनावश्यक बर्बाद होता पानी, नारी शोषण, समाज में बढ़ती नशे की कुप्रथा से दुःखी है। यह किशोर चित्रकार अपनी कला के माध्यम से समाज को जगाने का काम कर रहा है।

खुशहाल सिंह को प्रकृति से खास तरह का लगाव है, इसलिए तो वह समाज के यथार्थ के साथ-साथ प्रकृति के विभिन्न रूपों को कैनवास, कागज़ पर चित्रित करता है। पक्षियों के रंग, आकार, उनकी गतिविधियाँ इसे अच्छी लगती हैं तो हरे-भरे पहाड़, खेत, ग्लेशियर, खूबसूरत जंगल, पहाड़ों की देह से झरते झरने, हिमालय की कोख से निकलती बहती नदियाँ, खूबसूरत वादियाँ, सुन्दर घाटियाँ, उमड़ते-घुमड़ते मेघों के समूह, सूर्योदय व सूर्यास्त के आकर्षक रंग, लहलहाते खेत-खलिहान, गगन में चमकता चाँद, टिमटिमाते तारे, सागर में उठती लहरें ये सब इसे लुभाते हैं और यही सब इसके चित्रों में भी दिखाई देता है। खुशहाल सिंह की ड्राइंग में बचपन से ही रुचि थी। फिर इसे मार्गदर्शन के लिए भीम सिंह जैसे शिक्षक मिल गये, जो खुद एक अच्छे, अनुभवी चित्रकार हैं। सरकारी स्कूल में ललित कला प्राध्यापक भीम सिंह अपने विद्यार्थियों को कला में निपुण बनाने का पूरा प्रयास करते हैं। खुशहाल सिंह ने बताया कि उसे सदैव अपने ललित कला के शिक्षक भीम सिंह व अपने माता-पिता का सहयोग व मार्गदर्शन मिलता रहता है। खुशहाल सिंह एक अच्छा चित्रकार बनकर नाम कमाना चाहता है। करियर के रूप में भी कला को अपनाकर अपने माता-पिता का सहारा बनना चाहता है।

-डॉ. ओमप्रकाश कादयान

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

-आपकी यामिका दीदी

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1- विश्व अंतरिक्ष सप्ताह कब मनाया जाता है?
उत्तर- 4 अक्टूबर से 10 अक्टूबर तक प्रत्येक वर्ष
प्रश्न 2 - विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा कौन-सा है?
उत्तर- सुन्दर वन डेल्टा
प्रश्न 3- विश्व का सबसे बड़ा चिड़ियाघर कौन सा है?
उत्तर- क्रूजर नेशनल पार्क (द. अफ्रीका)
प्रश्न 4- विश्व का सबसे बड़ा पक्षी कौन सा है?
उत्तर- शुतुरमुर्ग (ऑस्ट्रिच)
प्रश्न 5- शुष्क वायु में ध्वनि की गति कितनी होती है?
उत्तर- शुष्कवायु में 20°C (68 °F) पर ध्वनि का वेग 344 मी. प्रति सै. है।
प्रश्न 6- विश्व की सबसे बड़ी ताजा पानी की झील कौन सी है?
उत्तर- लेक सुपीरियर
प्रश्न 7- विश्व की सबसे गहरी झील कौन सी है?
उत्तर- बैकाल झील
प्रश्न 8- विश्व की सबसे बड़ी कृत्रिम झील कौन सी है?
उत्तर- वोल्गा झील
प्रश्न-9- विश्व का सबसे बड़ा स्तनधारी जीव कौन सा है?
उत्तर- नीली व्हेल

पार्थवी
कक्षा 10+1
मुकंद लाल पब्लिक स्कूल यमुनानगर, हरियाणा

पहेलियाँ

1-सही समय पर हमको सुलाती
साथ ही उसके सब जगते हैं,
एक थाल पर बारह अंकों की
गिनती से हम सब चलते हैं।

2-मैंने पूछा सवाल एक तुमसे
अगर मगर जुबाँ पर क्यों आया,
कौन जानवर बातों-बातों में
मुझसे चलकर तुम तक आया।

3-छह छेद हैं मेरी काया में
सात बात भइया मैं जानूँ,
मेरा नाम जो बतलाएगा
दिमागदार मैं उसको मानूँ।

4-वह जागे तो हम सोते हैं
सब उसको प्रणाम करें,
कभी सड़क पर दिखता है
पर्वतों को वे सलाम करें।

5-सबसे मैं दुत्कारा जाऊँ
मैं किसी को कुछ नहीं कहता,
बात-बात में डाँट पड़े जब
मेरा ही नाम जुबाँ पर रहता।

6-हर सुबह सोने से नहाते
साँझ ढले तो आग लगाते,
कालिख जब चेहरे पर लगे
रात भर के लिए छुप जाते।

7-चोरी करके चोर भाग रहा
उसको कैसे बताया जाता,
बातों-बातों में फिर भइया
कौन मुहावरा बरता जाता।

1-घड़ी, 2-मगरमच्छ, 3-बांसुरी, 4-सैनिक, 5-गधा, 6-बादल, 7-नौ दो ग्यारह होना

लव कुमार
पीजीटी हिंदी
रावमावि कोटला
यमुनानगर, हरियाणा

बड़ा

देखो बच्चो! 'बड़ा' बनाना,
नहीं इतना आसान।
'बड़ा' बनाने के लिए,
हमें करने होते काम।

मूँग, उड़द, अरहर, मोंठ को,
पहली शाम भिगोएँ।
अगले दिन फिर सभी दाल को,
मसल-मसलकर धोएँ।

भीगी हुई उस साफ दाल को,
सिल-बट्टे पर पीसें।
पिसी हुई उस दाल को मथकर,
पिट्ठी गोल बनाएँ।

लेकर एक कढ़ाई फिर,
हम उसमें तेल उबालें।
एक-एक पिट्ठी को लेकर,
उबले तेल में डालें।

गर्म तेल में अच्छे से,
फिर उनको सेंका जाता।
इतना सब कुछ सहने पर ही,
तैयार 'बड़ा' हो पाता।

बड़ा बनने के लिए हमें भी,
बहुत कष्ट झेलने पड़ते।
खूब परिश्रम करने पर ही,
जीवन में बड़े बन पाते।

सुनो ध्यान से प्यारे बच्चो,
खूब परिश्रम करना।
परिश्रम के बल पर जीवन में,
अपना लक्ष्य पाना।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
सराय अलावर्दी, गुरुग्राम, हरियाणा

हाथ धोने की गिनती

एक, दो, तीन, चार
हाथों को धो बार-बार।
पाँच, छह, सात, आठ
हाथों को रगड़ बार-बार।।
नौ, दस, ग्यारह, बारह
झाग बनाओ खूब सारा।
तेरह, चौदह, पंद्रह, सोलह
उँगली फँसा बना लो झोला।।
सत्रह, अठारह, उन्नीस, बीस
नाखूनों को रगड़,कीटाणु खींच।
स्वच्छ हाथों के लाभ अपार
इनसे करो बीमारियों पर वार।।

गोपाल कौशल भोजवाल
नागदा, जिला धार, मप्र

घमंडी हाथी और चींटी

एक समय की बात है चन्दन वन में एक शक्तिशाली हाथी रहता था। उस हाथी को अपने बल पर बहुत घमंड था। वह रास्ते से आते-जाते सभी प्राणियों को डराता-धमकाता और वन के पेड़-पौधों को बिना वजह नष्ट करता, ऊधम मचाता रहता।

एक दिन उस हाथी ने रोज़ की तरह जंगल के सभी प्राणियों को सताना शुरू किया कि तभी मूसलाधार बारिश होने लगी। तेज़ बारिश से बचने के लिए हाथी दौड़ कर एक बड़ी गुफा में जा छिपा।

गुफा के भीतर एक छोटी सी चींटी भी थी। उसे देखते ही हाथी हँसने लगा- 'हा...हा...हा... तुम कितनी छोटी हो, तुम्हें तो मैं एक फूँक मारूँगा तो चाँद पर पहुँच जाओगी। मुझे देखो मैं चाहूँ तो पूरे पर्वत को हिला दूँ, तुम्हारा जीवन तो व्यर्थ है।'

छोटी सी चींटी ने हाथी को घमंड न करने को समझाया, पर हाथी अपनी ताकत के मद में चूर था, वह लगातार चींटी का मज़ाक उड़ाता रहा और चींटी को डराने के लिए अपना पैर पटकने लगा। हाथी ऐसा कर ही रहा था कि तभी बाहर से धड़ाम की जोरदार आवाज़ आई। पैर पटकने की वजह से एक बड़ा सा पत्थर गुफा के मुहाने पर आ गिरा।

अब हाथी के होश उड़ गए। वह पत्थर हटाने के लिए आगे बढ़ा, परंतु अपनी पूरी ताकत लगा कर भी वह पत्थर को टस से मस नहीं कर पाया। बारिश रुकते ही चींटी बोली, देखो तुम मेरे छोटे होने का मज़ाक उड़ा रहे थे पर इस समय मैं अपने इसी छोटे आकर की वजह से ही इस गुफा से बाहर ज़िंदा जा सकती हूँ, लेकिन तुम नहीं। इतना कह कर चींटी अपने रास्ते चल देती है।

थोड़ी देर बाद चींटी जंगल में जा कर अन्य हाथियों को बुला लाती है और सब मिल कर गुफा के द्वार पर आ गिरा पत्थर हटा देते हैं और उस हाथी को गुफा के बाहर निकाल देते हैं। हाथी निकलते ही चींटी से अपने व्यवहार के लिए क्षमा माँगता है और उसके प्राण बचाने के लिए धन्यवाद देता है।

इस घटना से हाथी को यह बात समझ आ जाती है कि सभी प्राणियों के साथ मिल-जुल कर रहने में ही भलाई है और उस दिन के बाद वह हाथी कभी किसी प्राणी को नहीं सताता है।

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो! खेल-खेल में विज्ञान शृंखला के अंतर्गत कुछ नई व रुचिकर कक्षाकक्ष व कक्षा से बाहर की विज्ञान गतिविधियाँ /आवश्यक जागरूकता अभियान गतिविधियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं-

1. हाइड्रोजन गैस बनाकर परीक्षण करना-

स्थानीय मेले में उड़ने वाले गैस गुब्बारे देखकर बच्चे आश्चर्यचकित हुए। अब उनका यह प्रश्न था कि ये गुब्बारे हवा में ऊपर कैसे उड़ जाते हैं? तो उन्हें हाइड्रोजन गैस के बारे में बताया गया कि हाइड्रोजन गैस वायु से हल्की होती है। विद्यार्थी हाइड्रोजन गैस के बारे में और भी जानना चाहते थे। उन्हें बताया गया कि हाइड्रोजन गैस बहुत अधिक ज्वलनशील भी होती है और यह पॉप साउंड के साथ जलती है। रसायन विज्ञान प्रयोगशाला से आवश्यक उपकरण व रसायन लेकर रसायन विज्ञान प्रवक्ता ममता शर्मा के निर्देशन में हाइड्रोजन गैस बनाई गई। जिंक व तनु हाइड्रोक्लोरिक अम्ल की क्रिया से हाइड्रोजन गैस परखनली में बनाई गई। दो बोतलों व एक पाइप की सहायता से एक कम लागत का उपकरण तैयार किया गया। इस स्वनिर्मित उपकरण को फोटो में दर्शाया गया है। पानी में शैम्पू या तरल साबुन घोलकर उत्पन्न गैस को बुलबुलों के रूप में इकट्ठा किया गया। वे बुलबुले अलग करके छोड़ने पर हवा में उड़े भी। जब बुलबुलों के अंदर लाइटर से स्पार्क करके जलाया गया तो पॉप साउंड के साथ हाइड्रोजन गैस जली भी। विद्यार्थी इस गतिविधि को करके बहुत प्रसन्न थे।

2. नाव तली तक घूम आयी पर डूबी क्यों नहीं?

विद्यार्थियों ने कागज़ की दो नावें बनाईं और उनको एक पानी से भरे कंटेनर में तैराया। काँच के गिलास लेकर उसे नाव के ऊपर से कवर किया। गिलासों को सीधा पानी मे नीचे ले जाते गए जिसके साथ दोनों नावें भी नीचे तली तक चली गयीं। दोनों नावों को पानी के अंदर तक ले गए और फिर वापिस लाये। वापस आने पर देखा कि नावें न तो गीली हुईं और न ही डूबीं। ऐसा क्यों हुआ? जब हम गिलास को सीधा पानी के अंदर ले जाते हैं तो गिलास में मौजूद हवा गिलास सीधा होने के कारण बाहर नहीं निकल पाती। जिस कारण गिलास के अंदर खाली जगह

में हवा रहती है और उसमें पानी नहीं जाता। इसी कारण नाव तली तक घूम आयी, परंतु न तो गीली हुई न ही डूबी।

3. मोमबत्ती के जलने बुझने की गतिविधि-

कक्षा-8 के विद्यार्थियों ने किसी वस्तु के जलने के लिए वायु की उपस्थिति का पता लगाने के लिए जलती मोमबत्ती को काँच के एक दो-मुँहे पात्र से ढका। पात्र के नीचे से हवा अंदर जाने की जगह बनाकर रखी तो देखा कि मोमबत्ती जलती रहती है। क्योंकि ऐसी स्थिति में गर्म हवा पात्र के ऊपर वाले मुँह से बाहर जा रही है व नीचे से अंदर जा रही है। जिस कारण वायु का संचार बना रहता है। दूसरी स्थिति में नीचे से वायु के जाने का मार्ग बंद कर देते हैं तो वायु की कम उपस्थिति में मोमबत्ती की लौ फड़फड़ा कर जलती रहती है। अंत में मोमबत्ती के पात्र के ऊपर वाले मुँह को भी ढक दिया तो ऐसी स्थिति में वायु प्रवाह अवरुद्ध हो जाने व ऑक्सीजन के समाप्त हो जाने की वजह से मोमबत्ती बुझ जाती है। इस से सिद्ध होता है कि किसी वस्तु के जलने के लिए वायु की उपस्थिति व ऑक्सीजन की अनिवार्यता होती है।

करते रहना इस योजना का बेहतरीन भाग है। यह उन्नत शिक्षण टूल खेल-खेल में विज्ञान की तर्ज पर विज्ञान शिक्षण को पोषित कर रहा है।

5. यथास्थान फसल अवशेष प्रबंधन जागरूकता सेमिनार-

जागरूकता कार्यक्रमों की कड़ी में इस माह विद्यार्थियों का एक दिवसीय सेमिनार स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्र में हुआ, जिसमें विद्यार्थियों को कृषि वैज्ञानिकों द्वारा विद्यालय छात्र जागरूकता कार्यक्रम- 'यथा स्थान फसल अवशेष प्रबंधन मुहिम' के साथ जोड़ा गया। इसमें विद्यार्थी यह जान पाए कि फसलों के अवशेषों का उचित निपटान उसे खेत में जला कर नहीं, बल्कि उसका अधिकतम लाभ प्राप्त करके किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों ने कृषि विज्ञान केंद्र में विभिन्न उन्नत कृषि उपकरणों, नर्सरियों व कैम्पस में लगी कृषि-प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। धान की पराली न जलाने संबंधित जागरूकता रैली में भी भाग लिया। विद्यार्थियों ने कृषि वैज्ञानिकों से अपनी जिज्ञासानुरूप सवाल-जवाब भी किये।

अच्छा तो आदरणीय अध्यापक साथियो व प्रिय विद्यार्थियो! आगामी अंक में फिर से मिलते हैं नई विज्ञान गतिविधियों के साथ।

साइंस मास्टर/ ईएसएचएम
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दामला
खंड जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

4. 'सम्पर्क टीवी बॉक्स' उन्नत शिक्षण सहायक सामग्री-

सम्पर्क फाउंडेशन द्वारा 'फनविद साइंस' योजना के अंतर्गत जिले के विभिन्न विद्यालयों को सम्पर्क टीवी बॉक्स नामक एक डिवाइस निःशुल्क प्रदान की गयी है। इस डिवाइस को डिजिटल बोर्ड के साथ जोड़कर बिना इंटरनेट लिंक किये बहुत उन्नत किस्म की आधुनिक शिक्षण सहायक सामग्री के द्वारा विज्ञान शिक्षण करवाया जा रहा है। इस युक्ति की सामग्री की सहायता से विद्यार्थियों का अधिगम स्तर सुधरा है। इसमें छायाचित्रों, प्रायोगिक कार्यों के वीडियो, वर्क शीट्स व प्रॉजेक्ट कार्यों के असाइनमेंट, कौन बनेगा करोड़पति की तर्ज पर पाठ आधारित प्रश्नोत्तरी व पाठ के कठिन शब्दों की व्याख्या मूलचित्रों व उदाहरणों के साथ शिक्षण को आधुनिक तकनीक के समावेश से खुशनुमा बना रही है। प्रायोगिक कार्यों के वीडियो भी वास्तविक उपकरणों एवं सामग्री के साथ किये गए हैं जिससे विद्यार्थियों को इन प्रयोगों को खुद से करने में बहुत सहायता मिलती है। ये सम्पर्क टीवी बॉक्स शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में अध्यापक को भी स्मार्ट तकनीकी युक्त बनाते हैं। सम्पर्क फाउंडेशन का यह प्रयास जारी है कि जल्द ही इसमें तीनों माध्यमिक कक्षाओं के विज्ञान विषय के साथ साथ इसमें अन्य विषयों की सामग्री को भी जल्द ही उपलब्ध करवाया जाएगा। सम्पर्क फाउंडेशन के जिला समन्वयकों द्वारा अध्यापकों को तकनीकी सहायता, निरीक्षण व प्रशिक्षण द्वारा अपडेट

50 साल में जल OH से H_2O बना

बात उन दिनों की है जब रसायन विज्ञान का जन्म हो रहा था। कहने का मतलब रसायन-विज्ञान में शोध-कार्य अपनी पूरी लय में था। 1808 में डाल्टन ने रसायन की एक नई पद्धति नाम की पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें जॉन डाल्टन ने कुछ परमाणु सिद्धान्त दिये। जोसफ प्राउस्ट ने स्थिर अनुपात का नियम दिया। जॉन डाल्टन ने इस नियम का उपयोग किया अपने परमाणु सिद्धान्त को गणितीय विज्ञान का रूप देने में, जबकि नियम उसके सिद्धान्त को प्रमाणित नहीं कर रहा था। डाल्टन ने गुणित का सिद्धांत पेश किया। इस सिद्धांत के बाद सर डाल्टन ने सापेक्ष परमाणु व अणु भार प्रकाशित किये। हम जानते हैं कि गुणित के सिद्धांत से अकेले ही किसी पदार्थ का सूत्र नहीं बनाया जा सकता। पर यहाँ सर डाल्टन ने एक गलती की, उन्होंने ये मान लिया कि परमाणु एक से एक मिलकर ही अणु बनाते हैं। उस समय हाइड्रोजन व ऑक्सीजन के एक ही यौगिक का ज्ञान था। वह था जल। डाल्टन को यह यकीन था कि जल का सूत्र OH ही है, H_2O नहीं। सर डाल्टन ये मानने के लिए तैयार थे कि परमाणु 1 अनुपात 2 में भी जुड़कर यौगिक दे सकते हैं। इसी कारण वे CO व CO_2 जैसे सूत्र दे पाए उन्होंने ही NO व NO_2 का सही सूत्र निकाला, पर वे जल के सूत्र में अड़े रहे कि जल का सूत्र तो OH ही है। उन्होंने गे-लुस्साक के गैसीय आयतन के नियम को भी मानने से इंकार कर दिया। इस कारण वैज्ञानिकों में कितने साल तक जल के सूत्र का असमंजस बना रहा कि इसका सूत्र क्या है- OH या H_2O।

1811 में आवोगाद्रो ने ये सिद्ध किया कि एक निश्चित आयतन में ऑक्सीजन का भार उसी निश्चित आयतन में हाइड्रोजन के भार से 16 गुणा होता है। सर आवोगाद्रो ने कहा कि सर डाल्टन द्वारा दिया गया जल का सूत्र OH गलत है, क्योंकि जल में ऑक्सीजन व हाइड्रोजन के भार का अनुपात 8:1 है। आवोगाद्रो के इस नियम को जिसमें उन्होंने प्रस्तावित किया था कि समान ताप व दाब में सभी गैसों के समान आयतनों में अणुओं की मात्रा समान होती है, लगभग 50 साल तक वैज्ञानिकों व सर डाल्टन ने मानने से इनकार कर दिया। 50 साल तक जल का सूत्र OH ही स्वीकार किया गया।

सन् 1860 में अन्तरराष्ट्रीय रसायन कांग्रेस परमाणु भार पर एक सहमति बनाने के लिए हुई। बहुत ही सटीक प्रायोगिक डेटा पेश किया गया। तब सर कैनिज़ारो ने सर आवोगाद्रो का पक्ष लिया व उनके द्वारा दिये गए नियम को माना। तब सर आवोगाद्रो ने अपने प्रायोगिक कार्य का अवलोकन सर कैनिज़ारो को करवाया। उन्होंने अपनी परमाणु भार पर बनाई तालिका पेश की जिसमें उन्होंने हाइड्रोजन गैस का सूत्र H2 माना था। उन्होंने हाइड्रोजन का आणविक भार 2 लिया। जो डाटा इससे कुछ अलग था वहाँ ये माना गया था कि उच्च तापमान पर अणु टूट जाते हैं। कुछ वर्षों बाद सर कैनिज़ारो के परमाणु भार पर किये काम को सभी वैज्ञानिकों ने माना व अपनी सहमति दी। इस प्रकार 50 साल बाद जल को अपना सही सूत्र H_2O मिला।

सुनील अरोरा

संज्ञा

जब किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान
भाव के नाम का बोध है होता,
वह शब्द तब हम सब के लिए
व्याकरण की संज्ञा कहलाता।

जैसे दिल्ली, कबूतर और चीन
जैसे चाय, बिस्कुट और नमकीन,
ये सब उदाहरण हैं संज्ञा के
आगे संज्ञा के भेद भी हैं तीन।

व्यक्तिवाचक में व्यक्ति ही आते
दिल्ली, चाँद और सूरज भाते।
सबसे पहला भेद ये संज्ञा का
उदाहरण सबके याद हो जाते।

उसके बाद जातिवाचक संज्ञा आती
घोड़े, कबूतर, मोटर, गाड़ी चली आती,
मछली उछल-उछल कर भागी
मकड़ी अपने हुनर से जाल बनाती।

तीसरा भेद जैसे भावों की गंगा
पूरी हो जाती भाववाचक संज्ञा,
मिठास, खटास हम सबको भाये
बचपन लगता सबको रंग-बिरंगा।

लव कुमार
प्रवक्ता हिन्दी
रावमावि भूरेवाला
नारायणगढ़, अम्बाला
हरियाणा

बाधाएँ हमें मजबूत बनाती हैं

किसी गाँव में एक धर्मपरायण किसान रहा करता था। उसकी फसल अक्सर खराब हो जाया करती थी। कभी बाढ़ आ जाया करती थी तो कभी सूखे की वजह से उसकी फसल बर्बाद हो जाया करती। कभी गर्मी बेहद होती तो कभी ठंड इतनी होती कि वह बेचारा कभी भी अपनी फसल को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर पाया।

एक दिन किसान दुखी होकर मंदिर में जा पहुँचा और भगवान की मूर्ति के आगे खड़ा हो कर कहने लगा- भगवान बेशक आप परमात्मा हैं, लेकिन फिर भी लगता है आपको खेतीबाड़ी की जरा भी जानकारी नहीं है। कृपया एक बार बस मेरे अनुसार मौसम को होने दीजिये फिर देखिये मैं कैसे अपने अन्न के भंडार को भरता हूँ। इस पर आकाशवाणी हुई- तथास्तु वत्स! जैसे तुम चाहोगे आज के बाद वैसा ही मौसम हो जाया करेगा और ये साल मैंने तुमको दिया।

किसान बड़ा खुशी-खुशी घर आया और उसने गेहूँ की फसल बो दी। उस बरस भगवान ने कुछ भी अपने अनुसार नहीं किया और किसान जब चाहता धूप खिल जाया करती और जब वह चाहता तो बारिश हो जाती। किसान ने कभी भी तूफान को और अंधड़ को नहीं आने दिया। बड़ी अच्छी फसल हुई। पौधे बड़े लहलहा रहे थे। समय के साथ साथ फसल भी बढ़ी और किसान की खुशी भी।

आखिर फसल काटने का समय आ गया। किसान बड़ी खुशी से खेतों की ओर गया और फसल को काटने के लिए जैसे ही खेत में घुसा बड़ा हैरान हुआ और उसकी खुशी भी काफूर हो गयी क्योंकि उसने देखा कि गेहूँ की बालियों में एक भी बीज नहीं था। उसका दिल धक् से रह गया। किसान दुखी होकर परमात्मा से कहने लगा-हे भगवन्! ये क्या?

तब आकाशवाणी हुई- ये तो होना ही था वत्स! तुमने जरा भी तूफ़ान, आँधी, ओलों को नहीं आने दिया जबकि यही वे मुश्किलें हैं जो किसी बीज को शक्ति देती हैं और वह तमाम मुश्किलों के बीच भी अपना संघर्ष जारी रखते हुए बढ़ता है और अपने जैसे हजारों बीजों को पैदा करता है, जबकि तुमने ये मुश्किलें ही नहीं आने दीं, तो कैसे बढ़ता ये बताओ तुम? बिना किसी चुनौतियों के बढ़ते हुए ये पौधे अंदर से खोखले रह गये। यही होना था।

यह सुनकर किसान को अपनी गलती का अहसास हुआ।

दोस्तो, जब तक हमारी ज़िंदगी में बाधाएँ नहीं आतीं, परेशानियाँ नहीं आती हैं, तब तक हमें भी अपनी ताकत का अंदाजा नहीं होता है। बाधाएँ हमें मजबूत बनाती हैं जिससे हम अपनी ज़िंदगी में कुछ नया और बड़ा कार्य करें।

बस, बाधाओं और मुश्किलों से कभी भी घबराना नहीं चाहिए और उनका सामना करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

विनय मोहन खारवन
पीजीटी गणित
राकवमा विद्यालय
जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

2023

अक्टूबर-नवंबर माह के त्यौहार व विशेष दिवस

2 अक्टूबर-	महात्मा गांधी जयंती
5 अक्टूबर-	विश्व शिक्षक दिवस
15 अक्टूबर-	महाराजा अग्रसेन जयंती
11 अक्टूबर-	अन्तरराष्ट्रीय बालिका दिवस
16 अक्टूबर-	विश्व खाद्य दिवस
24अक्टूबर-	दशहरा
28 अक्तूबर-	महर्षि वाल्मीकि जयंती
1 नवंबर-	हरियाणा दिवस/करवा चौथ
12 नवंबर-	दीपावली
13 नवंबर-	विश्वकर्मा दिवस/गोवर्धन पूजा
18नवंबर-	छठ पूजा
11 नवंबर-	राष्ट्रीय शिक्षा दिवस
27नवंबर-	गुरु नानक जयंती
14 नवंबर-	बाल दिवस
19 नवंबर-	इंदिरा गांधी जन्म दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

The Most Important Answers of our Life

Dr. Himanshu Garg

We are a warehouse of knowledge. We have enough intelligence to solve a tricky puzzle in few seconds but some questions need your extra attention. Sometimes in the rush of solving external questions we leave the most important questions behind.

Once upon a time, a king woke up in the morning with three questions in his mind. The three questions were-

Who is the most important person?

What is the most important work?

Which is the most important time?

In the morning, he repeated these three questions in his royal court before eminent personalities and also ordered them to repeat these questions in the whole town with the beat of drums. The king also announced a good reward for the correct and satisfying answers. Every person had their own set of answers with proper justifications. Some said that King was the most important person, Some said God was the most important person, Some said it was one's child or one's parent, Some said it was the farmer, some replied it was a soldier and so on. The answers for the most important work was serving humanity, charity, patriotism etc. According to people, the time of birth, the time of death, the time of marriage or the time of success was the most important time. But the king was not satisfied with the responses.

Finally, the special advisor of the king suggested that the king should visit a sage who lived on the peak of Himalayas. The king was so excited to find the answer so the king ordered to make arrangements for the way. After travelling a long distance, the king reached the entrance of the cave where the sage lived. He left his sword outside the cave, as this was the custom. He posed his questions before the sage. The sage took him to the edge of cliff, from where the king could overlook his entire kingdom. The king felt so proud and happy to see his vast dominion.

Suddenly he heard a loud voice, " Turn around". The king turned towards the voice and saw the sage pointed the sword on the king. Then the sage said that I think, now you know the most important person, place and work. The king bowed as much in reverence and expressed his gratitude. The sage handed back the sword and the king returned to his palace.

When the royal court started next day, everybody wanted to know the correct answers. King replied that the sage gave me the answers in an instant.

The most important person is the person you are with. When we give our sole attention to the person we are dealing with, we make him feel important, cared and respected. All our positive emotions sprout naturally. So when you are with yourself, you are the most important person, love yourself. When you are with someone else, give your undivided attention.

When I saw my colossal kingdom from the top of Himalayas then I realized the most important work is to continue to love and care for our present work. As it can give us real happiness and we feel proud.

When the sage appeared with my sword and I was few moments away from death. Then I realized the most important time is 'now' that have power even to change the future too. Only in that moment, we had no regret or grief for our past and we had no fear of future. This is the most important moment, we can act in.

In fact, these three answers are summary of our good living. If we follow these answers in life, our life undergoes an automatic transformation.

Focus on the person you are with, Do your present work with love and live in the present...

Asstt. Professor
Govt. College for Women, Jind

LIFE IS LIKE A FLUTE, THE ONE WHO HAS LEARNED TO PLAY HAS LEARNED TO LIVE IT

There are many obstacles, crises and problems in the life of all of us, but if we become afraid of them, of losing, then life will become even more difficult. A philosopher has compared life to a flute and the holes in it have been referred to as obstacles. And whoever learns to play the flute by adjusting to the holes in the form of obstacles, his life will be as melodious as music.

Whatever difficult time or problem comes in our life, it teaches us important lessons of life, due to which we feel stronger in the future. What is needed is a positive mindset so that we can learn lessons in every situation and make ourselves stronger. Ups and downs, happiness and sorrow are two sides of the same coin. If there is happiness today, there will be sadness tomorrow. If there is sadness today, there will be happiness tomorrow. Time never remains the same.

Time keeps changing, we also have to change ourselves with time and move with time. The person who does not move with time is left behind in life. This is a very beautiful poem - Those who try never lose. No matter how difficult the task is, it will definitely be completed if we continuously strive to complete it. It is possible that we may not be successful in that task the first time, we may fail the second time too, but if we keep trying continuously then we will definitely succeed.

Obstacles may block the path for some time but it depends on us whether we change our path out of fear of those obstacles or face those obstacles boldly and reach our destination.

Gunjan Goel
Educationist
Hisar, Haryana

Hard Work: A Golden Key to Success

Manju Yadav

"A dream does not become reality through magic. It takes sweat, determination and of course hard work."

Success does not happen overnight. The only place where success comes before work hard is in the dictionary. The most successful people are those who are willing to put in a productive days work before they receive success.

Hard work is a golden key to success. Achievements, without hard work, are next to impossible. The person who is working hard day and night, sacrificing comfort, is able to attain success and zenith in life. Nothing is plausible without doing sincere efforts.

We know, life is not a bed of roses. It is full of challenges, sorrow, suffering, ups and downs and failures. We need to walk on the hard ground of reality. But on the other hand, life is not a bed of thorns, we can accomplish everything by determination, strong will power, spontaneous efforts and hard work.

Work is privilege and pleasure. We are the supreme creation of God. We are born to work and prosper in life. "Time and tide wait for none." If we waste time, time shall waste us. Great men of the world, were born in huts but died in palaces. Its aptly said,

"History is theirs whose language is the sun."

History proves that man is able to convert impossible to be possible only on the basis of hard work.

Everyone has the desire to achieve success, but to achieve success, one has to undergo rigorous trails and very few people are ready for it. The constant vigilance and preparedness to work is the price we have to pay for success.

To sum up, "Arise, awake and stop not till the goal is attained."

Work hard, have fun and make history.

TGT English
Govt. High school, S.P Badha
Gurugram, Haryana

Teacher as an Ambassador of Peace in a Multicultural and Multiethnic Society

"If we are to teach real peace in the world we shall have to begin with children"

- Mahatma Gandhi

India as a multicultural, multilingual, multiethnic society is known for ages. worldwide. Our ancient scriptures have been promoting the idea of Vasudhaiva Kutumbakam, which means the whole world is one single family (Hitopadesha). Such kind of thoughts definitely promote peace-oriented values among multicultural, multilingual, and multiethnic groups. The Indian Education system also emphasizes personality formation (including moral values) and fosters responsible citizenship. The education system also keeps on trying to design a curriculum for the inculcation of democratic and secular values among young children.

Peace education is more effective and meaningful when it is adopted according to the social and cultural context and the requirements of a nation. It should be enriched by its cultural and spiritual values mutually with the universal human values.

Peace education can manifest itself in many forms. It is a holistic practice and attempts to analyze issues from the micro, personal level to the macro, global level, linking the past to the present and future. Fields such as human rights education, multicultural education, global citizenship education, and conflict resolution education are all considered to be part of the field of peace education. Peace education is highly contextual, and while it will appear differently in different regions,

the essence is the same. Peace is peace, no matter where you are. Perhaps more important than the content of peace education is the pedagogy or teaching methods, through which education is delivered.

The goals of education for peace include developing a meditative and reflective self, equipped with knowledge, competencies and skills of conflict resolution; such individuals will have self-awareness, values of tolerance, compassion and competence to deal with crisis in a creative manner. In order to develop these attitudes, skills and competencies among pupils, the institutions of family and school have to be oriented to make conscious efforts to promote peace related skills. Development of peace-skills and attitudes would entail inspiring the atmosphere of school, personnel and staff to nurture such attitudes and competencies for peace. A teacher being central to the entire gamut of all relationships at school that is why their orientation is most crucial.

Japanese peace educator T. Murakami defines peace education as follows:

"Peace education attempts to sharpen awareness about the existence of conflict between people, and within and between nations. It investigates the causes of conflict and violence embedded in the perceptions, values and attitudes of individuals, as well as within the social, political and economic structures of society. It encourages the search for alternatives, including non-violent solutions, and the development of skills necessary for their implementation"

According to David Hicks (1988), peace education aims to develop the knowledge, attitudes and skills needed to:

(1) Explore concepts of peace both as a state of being and as an active process;

(2) inquire into the obstacles to peace and the causes of peace lessness in individuals, institutions and societies;

(3) Resolve conflicts in ways that will lead toward a less violent and more just world;

(4) Explore a range of alternative futures for building a more just world society.

Peace educators also stress the importance of teaching about, for and in peace. Teaching about peace involves giving students knowledge about war and peace issues. Teaching for peace means helping students develop skills of peace-making and creative conflict resolution. Teaching in peace education means creating a peaceful cooperative classroom atmosphere free of violence.

Peace educators stress that good peace education aims at empowerment, not despair, that teachers must go

beyond merely introducing students to the depressing facts of militarism, war and violence to show how we are part of a historical movement for peace; that teachers can inspire learners with internationally-acknowledged role models (Nobel Peace prize winners, individuals such as Gandhi, groups such as International Physicians for the Prevention of Nuclear War) and can show learners how to put into action their commitment to a world of peace.

Multicultural education relates to education and instruction designed for the cultures of several different races in an educational system. This approach to teaching and learning is based upon consensus building, respect, and fostering cultural pluralism within racial societies. Multicultural education acknowledges and incorporates positive racial idiosyncrasies into classroom atmospheres.

The National Focus group Position Paper on Education for Peace developed under the support of NCF-2023 states that the major edges of education for peace are: (a) bringing about peace-orientation in individuals through education; (b) nurturing in students the social skills and outlook needed to live together in harmony: (c) reinforcing social justice, as envisaged in the Constitution; (d) the need and duty to propagate a secular culture; (e) education as a catalyst for activating a democratic culture; (f) the scope for promoting national integration through education; and (g) education for peace as a lifestyle movement. The document further observes that Education for peace is not envisaged as a separate subject that would further augment the curriculum load, but a perspective from which all subjects are to be taught. On effective implementation of peace-oriented values, NCF-2023 states we have to focus on teacher education, textbook writing, school setting, valuation, media literacy, parent-teacher partnership and the need to address the practical implications of integration as the referred strategy for implementing education for peace.

The vision of NCF for teacher education was more toward sensitization to the demands of the new-age school system. It discussed preparing teachers to be a facilitator in teaching-learning situations.

All the stakeholders emphasized that government schools to include Peace

Education. When mainstreamed in the education system, Peace Education will help promote the knowledge, skills, attitudes, and values and create conditions conducive to peace, whether at an intrapersonal, interpersonal, inter-group, national, or international.

As envisaged in NEP-2020, all efforts should be made to promote 21st -century skills in children and empower them to address mental health and other issues such as child abuse, discrimination, and corporal punishment. A one-day consultation program was conducted to sensitize stakeholders on: Problems children face at school and outside. This program will have a far-reaching impact on the teaching and learning process in schools and other aspects of children's behavior.

The National Curriculum Framework of 2023 (NCF-2023) demonstrates a holistic approach to education that extends beyond traditional academics. It places a significant emphasis on fostering a society that is not only knowledgeable but also compassionate and socially responsible. One of its key objectives is to organize programs that promote an attitude of respect and responsibility towards women, recognizing the importance of gender equality and women's empowerment in our society.

Furthermore, NCF-2023 advocates the inclusion of Moral Education in the curriculum, aiming to instill ethical values and principles in students, equipping them with the tools to make morally sound decisions. Additionally, the framework recognizes the importance of teaching peace education as a distinct subject, nurturing an understanding of conflict resolution, tolerance, and global harmony. To ensure a comprehensive approach, NCF-2023 also encourages the integration of peace education throughout the curriculum, emphasizing the importance of creating a generation of individuals who not only possess knowledge but also possess the values and skills needed to contribute positively to a more peaceful and equitable world.

Peace education is not a new concept and has implications that are widely discussed and evaluated both domestically and internationally. Peace education training is the first step in building a culture of peace and must be taught to children from an early age. This is important in the current world situation so that when our children grow up, a culture of peace is already

ingrained in them. However, in order to provide education to students with peace of mind, we must first train school teachers.

The pivotal role that teachers play in learning and infusing values among children cannot be undermined. Therefore, continuous hand-holding of teachers through research, training, and workshops is the need of the hour.

Role of Teachers in Promoting Peace Education

A teacher is rhetorically called a nation-builder. When all nations are put together, they become the world as the word goes. In other words, a teacher is the builder of the world. He is a great catalyst. Hence it is incumbent upon him to effect the positive change in the minds of people on the whole.

The teacher must understand that multicultural, multiethnic, and multireligious problems in society are not to be dealt with in isolation in bits and pieces of a good peace education program but, being interconnected with all other problems of peace and violence, are addressed in the whole program. For example, developing qualities such as compassion and service to others can help reduce racial, religious, or other prejudices, but students of all backgrounds must take part in the program.

The teacher must be cognizant and wholly supportive of the basic nature and aims of peace education. According to Dale Hudson "...education that actualizes (people's) potentialities in helping them learns how to make peace with themselves and with others, to live in harmony and unity with self, humankind and nature." The principles upon which this statement rests include: The cardinal prerequisite for world peace is the unity of humankind, world order can be founded only on the consciousness of the oneness of humankind. It follows that, in this view, the teacher of peace education in an apparently diverse society must keep certain basic aims in mind: the achievement of a unified, peaceful society globally and within the nation, where world citizenship is fostered and "unity in diversity" is recognized and practiced.

The teacher should constantly keep in mind that the attainment of any aim is conditioned upon knowledge, volition, and action. Unless these three are forthcoming, nothing will be accomplished. The power needed to accomplish a peaceful world is the unification of humankind. To this end, the teacher must use his will-power. In the words of Sarvepalli Radhakrishnan, we should "... will peace with our whole body and soul, our feelings or instincts, our flesh and its affections." Then we should act intelligently to reduce intercultural, interethnic, and inter-religious violence, bringing a greater degree of unity and harmony in society. To accomplish this, the teacher should develop qualities such as tolerance, respect of appreciation of others, being fair and open-minded,

and being able and willing to consider other points of view looking beyond his or her own self-interest. In other words, the teacher must be sincerely attempting to be free of prejudice.

When a teacher becomes deeply and regularly involved in teaching peace education, it gives him an opportunity to take a long, deep look at his or her values and beliefs. In order to be a model for the students, the teacher has the opportunity of transformation and could modify the inner self. This modification would help the students to understand who is a peaceful person and a peacemaker. Thus, the teacher will have a powerful, positive influence on hundreds and thousands of children and youth.

Teachers must cope with prejudices, conflicts, and violence in an increasingly diverse society by starting with themselves. Firstly, the teacher must develop his own emotional intelligence. People with high EQ know and manage their own emotional lives well and understand and deal effectively with the feelings of others. They are skillful in relationships.

For this Teacher Education may act as a tool for providing awareness for the development of peace education among the citizens of our nation through student teachers. We must make some direct efforts for developing awareness for peace education among our students The trend toward interdisciplinary peace research must be encouraged, and researchers should continue to improve analytic approaches and collect new data that allow examination of the links between social enhancement and peaceful processes of societal changes. The use of mass media to spread peaceful societal changes promises to contribute significantly to expanding knowledge in this area.

Teachers are the ambassadors and architects of a nation. According to Dr. S. Radhakrishnan, the quality of a nation depends upon the quality of its citizens, the quality of its citizens depends upon the quality of their education, and the quality of their education depends on the quality of their teachers. A teacher's success depends upon effective teaching and ensuring a maximized learning experience. Teachers can change the mindset of students and promote understanding and tolerance among them. In the twenty-first century. there is a need for a paradigm shift in the minds of students from nationalism to universalism and from ethnic and cultural prejudices to tolerance and develop their minds to understand the importance of technology in different fields of activities.

In ancient times, teaching was purely a religious business. The teachers had to impart education connected to the respective philosophies of religion. Now teaching is a multilateral job. Therefore, here comes the saviour "The Teacher" and his role because since the inception of humanity, the teacher only has remained the ray of hope among all odds and darkness. An effective and emphatic role of a teacher can provide sustainable solutions through which we can achieve the long-desired motto of 'Vasudhaiv Kutumbkam'.

Dr. Sunita Yadav
SCERT Haryana, Gurugram

Drizzle of Tears

One day I was taking a walk with my sorrow and pain,
When suddenly dark clouds appeared and it began to rain,
The cold rain mingled with my warm tears and fell to the ground,
And I said to myself as there was no one else around.

Oh look its raining shards of glass from the sky,
They pierce my skin till the blood runs dry,
Making small puddles and rivulets of blood,
That go down the drains in a torrential flood.

Oh look the clouds are as dark as my fears,
Over burdened with my sorrow and filled by my tears,
So heavy they cant hold them anymore,
So they burst like my heart in an incessant downpour.

The rain drums on my roof a dying ditty,
I have no hope now but idont want your pity.
The noise of the rain drowns my tearful cries,
As something beautiful inside of me dies.

Then thunder rolls as betrayal strikes,
And lightening falls on the tree of life,
Leaving behind a burnt out empty shell,
Upon this earth a sight straight from hell.

Burning down all hope till its very roots, lightening streaks
Like white dishelleved hair, drooping lips, hollow cheeks,
Furrowed brows, dark circled eyes,
And a soul so tired of all the lies.

Then suddenly the rain stops... but the dark clouds dont go away,
A drizzle of tears continues like a deep wound that bleeds for many days.
Oh how many endless days must I pass in this rain of pain?
Before I can ever smile and see the sunshine again?

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Be Creator of 'miracles' with your brain

Anju Soni

Today, I am going to share with you the principles of 3 POWERS by which you can be the Creator of miracles just to give positive input to your brain. 3 Powers principles is very special andunique. 3 Powers principle can be used in building our personality. 3 powers principles

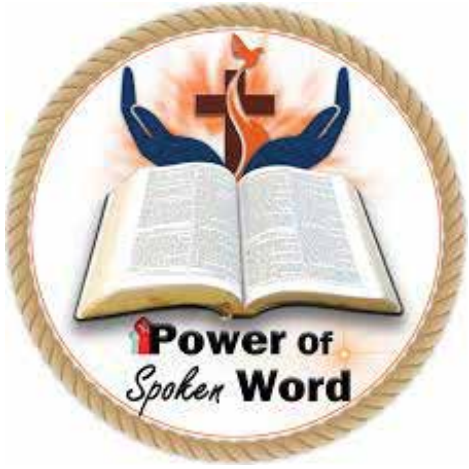

build you to overcome the small challenges of your daily life through WORDS. You can use these principles anywhere in your Life. You can use these principles in your personal growth. You can also use these principles to achieve your goals. And also in building your relationship within your spouse, children, and other family members and your business team.

And to resolve your conflicts emerging on day today work. And build you that level that you stop complaining in your life and start

taking responsibility. These principles gives you unlimited power and belief.

What are three powers ?

You create power in your life by using these three principles:-

1. POWER OF SPOKEN WORDS
2. POWER OF UNITY and
3. POWER OF SUBMISSION.

POWER OF SPOKEN WORDS:-

You are the architect of your future. All powers of the universe comes out from your mouth. Your words are your future. You can build your future; you can design your future with your words. You can bring progress, improvement, and transformation in yourself by saying what type of person you want to become in the future. What type of career you want in your life? The success journey starts from you. And your belief is the starting point of your success journey. Your belief- your struggle-and your success.

You have to commit to yourself over and over whatever the odds, whatever situation you face in your life. No matter whatever tests you are put to. You have to say, to yourself I am a winner, and I am going to win. I am not going to accept defeat; I will overcome all the challenges. This is the attitude you have to produce before you win. You can achieve all your goals, by articulating and verbalizing as if you have already achieved your goal. Yes, I am going to make it happen. When there is hope in your words, it becomes blessings. This can encourage and empower your people, you are associated with. You can create miracles with your brain. Your brain is your treasure house, your brain is the key, you can achieve whatever you want by your brain. You are the Torch Bearer of HOPE in your lives. So take care of your spoken words. And you can create unlimited personal growth from you.

POWER OF UNITY:-

Unity is working as a team. Your first team is your school team and home team.

We should work on building unity. People are attracted towards Unity. If there is unity between two-persons, the third person will be attracted to him or her.

So, always appreciate people for something good. Build their self-image, by saying something positive to him like...You have a very special talent, you are very unique. If you decide, you can do it.

If parents live in unity, children are attracted. If the teacher and principal are in unity, they attract more new students in their school and opposite to it will create a vice-versa result. If the prime minister and the cabinet ministers are operating in unity, they will attract the positive attention of their citizens. So be in unity and teach unity.

POWER OF SUBMISSION:-

It means when you are in submission to your mentor/ teacher, you generate more belief, more confidence, and more power in yourself. Remember, submission is not weakness but strength. The difference between an average person and a super achiever is that the average people do not have a mentor in their life.

But, every super-achiever has a mentor in their life. People who do not have a mentor in their life, they will be trading their time and skill. Don't feel depressed or disappointed, when the mentor/ teacher corrects you. If you don't give him authority, he may not feel free to give you suggestions. Your relationship with your mentor is very significant for your mega success. So, put yourself in submission to learn.

Legal Assistant
SCERT Haryana, Gurugram

Significance of Dusshera festival

Dussehra, also known as Vijayadashami, is a significant Hindu festival celebrated with fervor and enthusiasm across India and other parts of the world. This festival holds great cultural, historical, and religious significance, symbolizing the victory of good over evil. In this essay, we will explore the various aspects that make Dussehra a special and revered occasion.

Historical Context:

Dussehra marks the triumph of Lord Rama over the demon king Ravana. According to the Hindu epic Ramayana, Ravana had abducted Sita, the wife of Lord Rama. After a fierce battle that lasted ten days, Lord Rama, with the help of the monkey god Hanuman and his loyal army, defeated Ravana on the tenth day, which is celebrated as Dussehra. The victory of Rama symbolizes the victory of righteousness over wickedness, dharma over adharma.

Cultural Celebrations:

The festival is celebrated with diverse cultural practices and rituals across the country. One of the most iconic traditions is the staging of Ram Lila, a dramatic retelling of the Ramayana. In various regions, elaborate processions, plays, and musical performances take place, depicting the heroic deeds of Lord Rama and the eventual downfall of Ravana. These cultural activities not only entertain but also educate people about the values embedded in ancient scriptures.

Religious Observance:

For many Hindus, Dussehra holds immense religious significance. On this day, devotees visit temples to offer prayers and seek the blessings of the divine. The day is considered auspicious for starting new ventures and endeavors. People also perform special pujas at home, honoring the victory of good over evil. The burning of effigies of Ravana, a common practice during Dussehra, symbolizes the eradication of negative forces from one's life.

Symbolism and Significance:

Dussehra is a celebration of the triumph of righteousness and the defeat of evil. It symbolizes the eternal battle between good and evil that exists within each individual. The victory of Lord Rama serves as a moral and spiritual guide, encouraging people to adhere to principles of truth, integrity, and compassion. The festival inspires individuals to overcome their inner demons and cultivate virtuous qualities.

Unity in Diversity:

One remarkable aspect of Dussehra is its celebration across diverse communities and regions in India. While the central theme remains the same – the victory of good over evil – the cultural expressions, rituals, and traditions associated with the festival vary across states. This diversity reflects the rich tapestry of Indian culture and fosters a sense of unity among people from different backgrounds.

Social Harmony and Charity:

Dussehra is also a time for social

harmony and charitable activities. Many communities organize events to help the underprivileged, reinforcing the idea of compassion and empathy. It is common for people to donate clothes, food, and other necessities to those in need during this festive season. The spirit of giving and sharing contributes to a more compassionate and inclusive society.

Modern Relevance:

In contemporary times, the essence of Dussehra remains relevant as it encourages individuals to confront their own shortcomings and make a conscious effort to choose the path of righteousness. The symbolic burning of Ravana effigies is seen not only as a ritualistic act but also as a metaphor for eliminating the vices and negativity within oneself.

Educational Value:

Dussehra serves as an educational platform, especially for younger generations. Through the retelling of mythological stories, children and adults alike gain insights into moral values, ethical conduct, and the consequences of deviating from the path of righteousness. The festival becomes a means of passing down cultural and moral heritage from one generation to the next.

Conclusion:

In conclusion, Dussehra is a celebration that transcends religious boundaries, bringing people together in the spirit of righteousness and virtue. The historical and cultural significance, coupled with the religious observances, make Dussehra a multifaceted festival that plays a crucial role in shaping the collective ethos of the society. As individuals burn the effigies of Ravana, they are not just participating in a ritual but also symbolically reaffirming their commitment to the values that Dussehra represents – the victory of good over evil, the triumph of light over darkness.

The Sounds of Silence

Your silence speaks volumes,
Though you don't say a word,
You observe and see it all,
But pretend and let it go ignored.

When people are dying on streets,
And don't have enough to eat.
Yet into our cocoons we retreat,
We have no words left to speak.

We don't want controversy,
Or to get involved in things,
So we just lurk about quietly,
Being so silent on the wings.

And people are exploited,
And the situation worsens.
But the sound of our silence,
Grows so loud that it deafens.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

The significance of Diwali

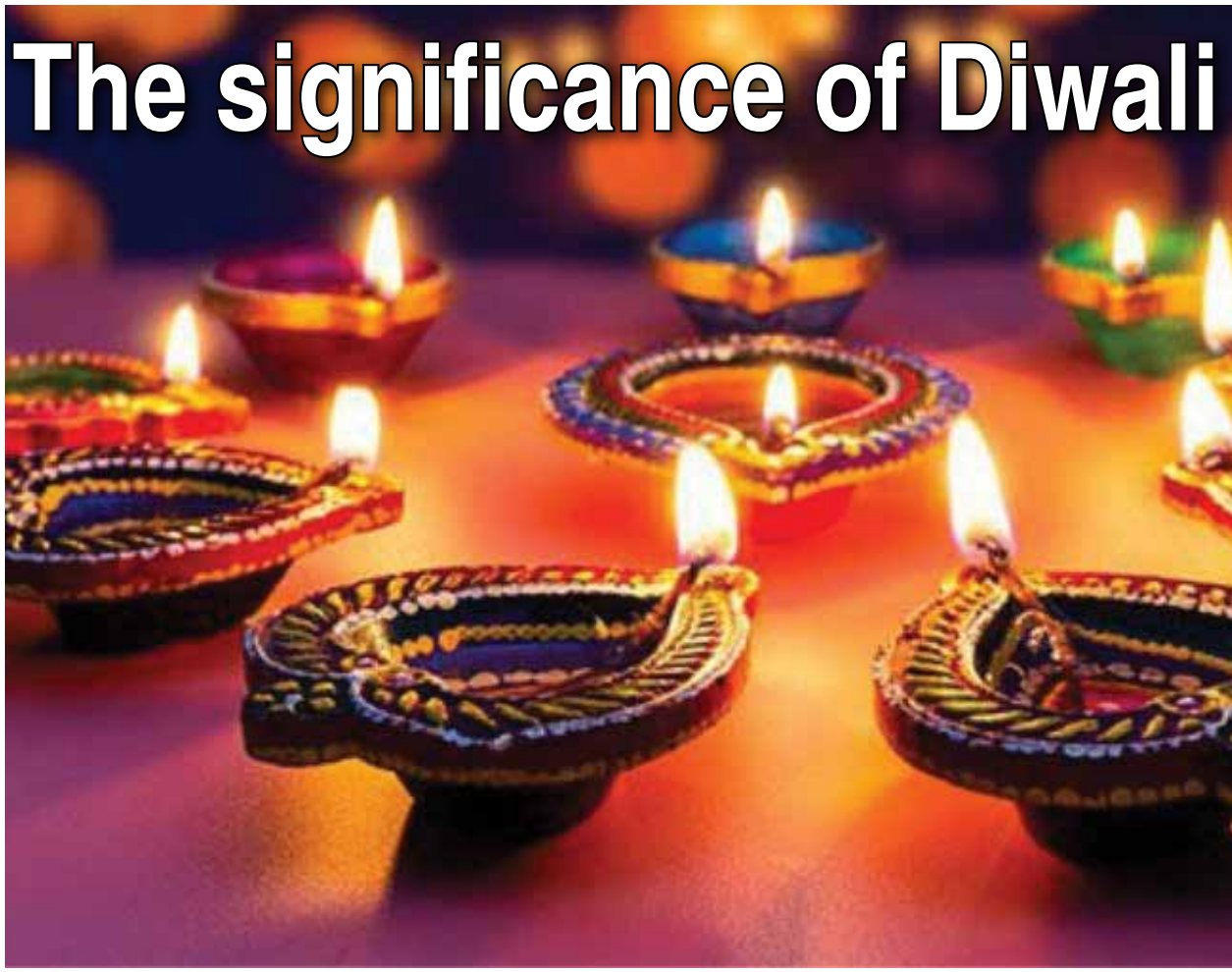

Diwali, also known as Deepavali, is one of the most widely celebrated festivals in India and holds immense cultural, religious, and social significance. This festival of lights signifies the triumph of light over darkness and good over evil. In this essay, we will delve into the multifaceted significance of Diwali and the various ways in which it is celebrated.

Religious and Mythological Significance: Diwali has its roots in Hindu mythology and is associated with several legends. One of the most prominent narratives is the return of Lord Rama to Ayodhya after defeating the demon king Ravana, as told in the epic Ramayana. The people of Ayodhya welcomed Rama by lighting oil lamps, or diyas, to illuminate his path and celebrate his victory. This tradition has since evolved into the modern-day practice of lighting lamps during Diwali, symbolizing the victory of light over darkness and the triumph of good over evil.

Another significant mythological tale linked to Diwali is the story of Lord Krishna defeating the demon Narakasura. Lord Krishna's victory is celebrated with great fervor on the day of NarakaChaturdashi, which is the second day of the Diwali festival. This narrative reinforces the theme of the victory of righteousness and the vanquishing of darkness.

Cultural Celebrations:

Diwali is a festival that transcends religious boundaries and is celebrated by people of various faiths across India. The preparations for Diwali typically begin weeks in advance, with families cleaning and decorating their homes, buying new clothes, and preparing special festive meals. The exchange of gifts and sweets is a common practice during Diwali, fostering a sense of joy and camaraderie among friends and family.

The festival is marked by vibrant decorations, with homes and public spaces adorned with colorful rangoli (artistic patterns created on the ground using colored powders), diyas,

candles, and electric lights. The sight of illuminated homes and streets during Diwali creates a visually stunning and festive atmosphere.

Symbolism of Light:

The central theme of Diwali is the triumph of light over darkness, both literally and metaphorically. The lighting of lamps and candles symbolizes the dispelling of ignorance and the arrival of knowledge and wisdom. Diwali encourages individuals to reflect on their lives, dispel negativity, and embrace positivity. The symbolic act of lighting lamps is a reminder to strive for inner illumination and enlightenment.

Lakshmi Puja and Prosperity:

Diwali is also associated with the worship of Goddess Lakshmi, the Hindu goddess of wealth and prosperity. On the third day of Diwali, families perform Lakshmi Puja to seek blessings for wealth and abundance. It is believed that Goddess Lakshmi visits homes that are clean and well-lit, bringing prosperity and good fortune. Business owners and merchants perform special pujas to seek the goddess's blessings for a prosperous year ahead.

The custom of bursting firecrackers during Diwali is often seen as a way to drive away evil forces and invite prosperity. However, in recent years, there has been growing awareness about the environmental impact of fireworks, leading to discussions on celebrating a more eco-friendly Diwali.

Family Bonding and Togetherness:

Diwali is a time when families come together to celebrate and strengthen their bonds. The exchange of gifts and the sharing of festive meals foster a sense of unity and togetherness. It is common for family members, regardless of age, to participate in the various rituals and activities associated with Diwali, creating lasting memories and reinforcing familial ties.

Renewal and New Beginnings:

Diwali is also considered an auspicious time for new beginnings. Many people use this occasion to start new ventures, make important life decisions, or initiate positive changes in their lives. The festival serves as a reminder that no matter how dark the circumstances may be, there is always an opportunity for renewal and the emergence of light.

Secular Celebration:

While Diwali has its roots in Hinduism, it is celebrated by people of various religious and cultural backgrounds. In India, it is not uncommon to find people from different communities and faiths joining in the festivities, exchanging greetings, and participating in the joyous atmosphere. This inclusive nature of Diwali reflects the cultural diversity and harmony that defines India.

Global Recognition:

In addition to being widely celebrated in India, Diwali has gained recognition and observance on a global scale. In various countries, especially those with significant Indian diasporas, Diwali is marked by cultural events, community gatherings, and the lighting of lamps. This global celebration highlights the universality of the festival's message of light, goodness, and triumph over adversity.

Conclusion:

Diwali, with its rich tapestry of religious, cultural, and social significance, stands as a beacon of light and hope. The festival not only bring joy and celebration but also imparts valuable lessons of righteousness, the pursuit of knowledge, and the importance of family and community. As people come together to illuminate their homes and hearts during Diwali, they participate in a tradition that has endured for centuries, carrying forward the timeless message of light overcoming darkness.

Amazing Facts

1. **Gardening is said to be one of the best exercises for maintaining healthy bones.**
2. The first United States president to visit China was Richard Nixon
3. The most popular show amongst baby boomers is Star Trek.
4. The first jet engine was invented by Frank Whittleof of England in 1930.
5. In a day, an elephant can drink 80 gallons of water
6. The term "the whole 9 yards" came from WWII fighter pilots in thePacific. When arming their airplanes on the ground, the .50 calibermachinegunammo belts measured exactly 27 feet, before being loaded into thefuselage. If the pilots fired all their ammo at a target, it got "the whole 9yards."
7. In 1948 and 1950 the oldest ears of popping corn were discovered. They were located in the Bat Cave of west central New Mexico. They ranged in size from smaller than a penny to approximately two inches, and were about 4,000 years old.
8. The only real person to be a Pez head was Betsy Ross.
9. It cost the soft drink industry $100 million a year for thefts committed involving vending machines.
10. The only two days of the year in which there are no professional sports games (MLB, NBA, NHL, or NFL) are the day before and the day after the Major League All-Star Game.
11. Watermelon is considered a good gift to give a host in Japan and China.
12. The planet Venus spins opposite to the other planets in the solar system.
13. Dairy cows can produce 20 to 35 gallons of saliva a day.
14. A duck's quack doesn't echo, and no one knows why.
15. When the Pez mint dispenser was first introduced it was meant to replace the activity of smoking.
16. The speed of sound must be exceeded to produce a sonic boom.
17. A B-25 bomber airplane crashed into the 79th floor of the Empire State Building on July 28, 1945.
18. Over 600,000 people died as a result of the Spanish influenza epidemic.
19. From all the vegetables, beets contain the most sugar.
20. Smelling bananas can help a person lose weight.
21. In Miami, Florida, roosting vultures have taken to snatching poodles from rooftop patios.
22. Only female mosquitoes bite humans. Male mosquitoes live on natural liquids from plants and other resources.
23. One out of every five births in the United States are delivered by Cesarean section.
24. In 1980, a Las Vegas hospital suspended workers for betting on when patients would die.
25. Studies indicate that surgeons who listen to music while they operate improve in their performance.
26. Thomas Edison was afraid of the dark.
27. Thailand used to be called Siam.
28. A sneeze can travel as fast as one hundred miles per hour.
29. The Pentagon cost $49,600,000 to build in 1941.
30. Desert snails can stay in their shell for up to three years.

https://greatfacts.com/

1. Founded in Italy 1472, Monte deiPaschi di Siena is the world's oldest 21st century: University; Bank; Church; or Estate Agency? **Bank**
2. A maraca, originally made from a gourd and beans, is a Latin-American: Curry; Ceremonial hat; Percussion instrument; or Infant's carriage? **Percussion instrument**
3. Joshua, Klitschko, Fury and Haye are: Atlantic flight paths; 2016 typhoons; World champion boxers; or Birth surnames of One Direction members? **World champion boxers**
4. What day is named after Biblical accounts of crowds laying cloaks and branches on Christ's path into Jerusalem? **Palm Sunday** (alternatively Yew Sunday, or Branch Sunday)
5. Galia, Honeydew, Cantaloupe and Horned are types of: Snowflake; Lizard; Melon; or Crochet hook? **Melon**
6. First adopted in 1858, the earliest standard army camouflage is (still popular internationally): Rifle Green; Gun Grey; Bark Brown; or Blood Red? **Rifle Green**
7. What gemstone is fossilized tree sap: Tiger's Eye; Topaz; Amber; or Garnet? **Amber**
8. A jointing/bordering metal strip used in stained/leaded glass windows is called a: Came; Went; Been; or Gone? **Came**
9. What's the square root of 729: 19; 27; 33; or 72? **27**
10. Derived from Greek for 'servant-woman' what term refers to a non-medical companion at birth, and increasingly death too? **Doula**
11. Smith and Wesson is a famous maker of: Earth-diggers; Pianos; Firearms; or Sugar? **Firearms**
12. The Bixa Orellana plant's annatto seeds (used for saffron/paprika substitute and cosmetic dyes) is also called the: Lipstick tree; Blusher rose; Mascara vine; or George Bush? **Lipstick tree** (and Achiote, from the Americas)
13. An aquifer is a type of: Tree; Agreement; Punctuation mark; or Water-bearing rock layer? **Water-bearing rock layer**
14. In HTML computer language an 'unordered list' equates to what in conventional writing/printing? **Bullet points** (or bullets)
15. The human ailment ankylosis is: Sprained ankle; Joint immobility; Cramp; or Paranoia? **Joint immobility** (due to fibrous growth)
16. Name the first man-made Earth satellite, launched 1957, meaning 'fellow-traveller' in Russian? **Sputnik (Sputnik 1)**
17. The old Anglicised French word 'soupçon' ('soupsonn') means a very (What?) amount: Large; Small; Fluid; or Hypothetical? **Small** (as in a tiny sample or addition, for instance of mustard to a dish)
18. What word prefixes the following to make four different terms: Gallery; Range; Star; Jacket? **Shooting**
19. Star Anise is a: Tree and spice; Arabian pattern; Parthenon mosaic; or Moon of the Sun? **Tree and spice**
20. Having an eagle emblem, name the oldest motorbike company still making bikes into the 21st century? **Moto Guzzi**
21. Amazon's streaming device launched 2014 is abbreviated to: Sparkplug; Firestick; Knobdongle; or Coldplay? **Firestick** (fully and less memorably 'Fire TV Stick')
22. The Ballon d'Or is an annual award for the world's best: Clown; Footballer; Country song; or Architect? **Footballer** (soccer player)
23. In physics/electronics, Ohm's Law is: "The current through a conductor between two points is directly proportional to the (What?) across the two points.": Temperature; Pressure; Voltage; or Mileage? **Voltage**
24. CJKV - a language system using hanzi/kanji - is an abbreviation of which four nations? **(four answers required) China Japan Korea Vietnam** (or Chinese Japanese Korean Vietnamese - hanzi/kanji are among different national terms for the symbols in such languages)
25. Which four months of the year are named after their numerical order in the old Roman calendar? (four answers required) **September, October, November, December** (seven, eight, nine, ten)

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-257-general-knowledge/

आदरणीय संपादक महोदय,

सादर नमस्कार।

आपके यशस्वी मार्ग निर्देशन में संपादित हो रही शिक्षा विभाग हरियाणा की मासिक पत्रिका, 'शिक्षा सारथी' का सितंबर-2023 अंक पढ़ने का सौभाग्य मिला। मुख-पृष्ठ को देखते ही पता चला कि यह अंक राष्ट्रीय तथा राज्य शिक्षक पुरस्कार विजेता शिक्षकों को सम्मानित करने के लिए 5 सितंबर को हुए, 'शिक्षक सम्मान समारोह' के ऊपर प्रकाश डाल रहा है। संपूर्ण शिक्षक-वर्ग की तरफ से मैं हमारे प्रेरणा-स्रोत सभी 69 राज्य शिक्षक पुरस्कार विजेता शिक्षक-बंधुओं को हार्दिक बधाई देती हूँ। आशा करती हूँ कि माननीय राज्यपाल हरियाणा श्री बंडारू दत्तात्रेय के उद्बोधन में बताए गए महात्मा गांधी जी के, तीन एच- हैड, हैंड, और हार्ट को आधार मानकर हमारा संपूर्ण शिक्षक वर्ग भी विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करते हुए राष्ट्र के नव-निर्माण में अपनी प्रभावी भूमिका निभाएगा। प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर सोनाली वोहरा के आलेख, 'साँझी सभा' में विद्यालय प्रबंधन समिति के गठन और कार्य तथा 'एसएमसी पोर्टल' से संबंधित जानकारी अभूतपूर्व प्रतीत हुई। एक ओर जहाँ प्रधानाचार्य डॉ. राजीव वत्स का आलेख, 'ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसॉर्डर' बच्चों से संबंधित नवीन जानकारी लिए हुए था, वहीं दर्शन लाल बवेजा जी का आलेख 'खेल-खेल में विज्ञान' भी हर बार की भाँति ज्ञानवर्धक और रोचक था। डॉ. ओमप्रकाश कादयान के आलेख को पढ़कर विद्यार्थियों और शिक्षकों को स्काउटिंग के माध्यम से एक बेहतरीन नागरिक बनने की प्रेरणा मिलती है। पैंसिल स्कैच में जान डाल देने वाले विद्यार्थी सुमित से हमारे सभी विद्यार्थियों को प्रेरणा लेनी चाहिए। 'बाल सारथी' भाग बहुत ही रोचक और मनोरंजक था। अंत में मैं संपूर्ण संपादन मंडल को हार्दिक बधाई देती हूँ।

नीलम देवी, प्रवक्ता संस्कृत
स्व.से.चौ.ज.रावमावि गिगनाऊ
खंड-लोहारू, भिवानी, हरियाणा

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सादर नमस्कार।

आपके कुशल मार्गदर्शन में सम्पादित एवं शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा प्रकाशित 'शिक्षासारथी' के समस्त सुधी पाठक नये अंक को पढ़ने के लिए लालायित रहते हैं। सितम्बर-2023 का अंक 'शिक्षक दिवस' की विशिष्टता को समेटे हुए मेरे पाठक मन के साथ-साथ शिक्षक होने की पावन अनुभूति का भी एहसास करा रहा है। अंक के प्रथम पृष्ठ पर संपादक महोदय ने अपनी लेखनी के द्वारा हमारी पावन संस्कृति के संवाहक वेदों से श्लोक के माध्यम से जो गुरु की महिमा बताई उसे पढ़ कर मन निर्मल हो गया। शिक्षक दिवस पर पुरस्कृत सभी शिक्षकों को हृदय तल से शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने शिक्षकों का आह्वान करते हुए कहा कि भावी पीढ़ी के सपनों को पंख लगाने का काम केवल शिक्षक ही कर सकते हैं। अतः शिक्षक होने पर आपको गर्व होना चाहिए। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का उद्बोधन भी हमें गौरवान्वित करने वाला है। सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के जन्मदिन पर शिक्षकों को सन्देश देते हुए कहा कि शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति करना शिक्षक का प्रथम दायित्व है। विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में राज्य पुरस्कार विजेता शिक्षकों को माननीय राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने वर्ष 2022 एवं 2023 के लिए पुरस्कार प्रदान करते हुए उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन के अनुभवों को साँझा करते हुए कहा कि वे शिक्षकों के बीच स्वयं को पाकर आह्लादित हैं। इसी क्रम में शिक्षामंत्री श्री कँवर पाल का सम्बोधन भी कर्णप्रिय लगा। इस कार्यक्रम का हिस्सा होने के कारण मैं स्वयं को धन्य समझता हूँ। विभाग द्वारा 'वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का शुभारंभ किया जाना भी एक सकारात्मक पहल लगी। इस अंक में पुरस्कार पाने वाले शिक्षकों और विभाग के उच्चाधिकारियों के विचार भी पाठकों के लिए प्रेरणादायक हैं। स्काउटिंग और साँझी सभा जैसे लेख भी शिक्षा-प्रद लगे। हिन्दी-दिवस पर विशेष रूप से समाहित लेख 'हिन्दी है जन - जन की भाषा' मेरे मन को छू रहा है। इस विशेषांक के लिए समस्त सम्पादन मंडल को हार्दिक साधुवाद प्रेषित करता हूँ।

पवन कुमार स्वामी
प्राथमिक अध्यापक
रा मा सं प्रावि चुंगी- 7, लोहारू, भिवानी, हरियाणा

बच्चों को बच्चे रहने दो

बच्चों को बच्चे रहने दो
खुलकर मन की कहने दो
मत थोपो उन पर सपने
बस हो जाओ उनके अपने
उनके मन की बातें जानो
कभी तो उनकी भी मानो
भीतर का रस बहने दो
बच्चों को बच्चे रहने दो
खुलकर मन की कहने दो
उनमें सागर-सी गहराई
उनकी बातों में सच्चाई
निष्कलंक और निष्कपट हैं
पावन मन बिन लाग-लपट हैं
उन्हें थपेड़े सहने दो
बच्चों को बच्चे रहने दो
खुलकर मन की कहने दो
उनको दे पाएँ आकार
यही तो गुरुओं से दरकार
प्रेम-प्यार के पाठ पढ़ाएँ
बच्चों को हम नेक बनाएँ
भारी भरकम ढहने दो
बच्चों को बच्चे रहने दो
खुलकर मन की कहने 22दो

प्रद्युम्न भल्ला

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए

जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए

नई ज्योति के धर नये पंख झिलमिल,
उड़े मर्त्य मिट्टी गगन-स्वर्ग छू ले,
लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी,
निशा की गली में तिमिर राह भूले,
खुले मुक्ति का वह किरण-द्वार जगमग,
उषा जा न पाए, निशा आ ना पाए।

जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए

सृजन है अधूरा अगर विश्व भर में,
कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी,
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी,
कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी,
चलेगा सदा नाश का खेल यों ही,
भले ही दिवाली यहाँ रोज आए।

जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए

मगर दीप की दीप्ति से सिर्फ़ जग में,
नहीं मिट सका है धरा का अँधेरा,
उतर क्यों न आएँ नखत सब नयन के,
नहीं कर सकेंगे हृदय में उजेरा,
कटेंगे तभी यह अँधेरे घिरे अब
स्वयं धर मनुज दीप का रूप आए

जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए

गोपालदास 'नीरज'

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114